'दिन रात कमाईयड़ो सो आयो माथे'

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश नवम्बर, 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

आपके यहां आने की गर्ज़, कोई सैर करने नहीं आये दुनियां में। इन्सान इतना धंधों में फंसा पड़ा है कि वक्त नहीं निकाल सकता है। आपने बड़ी हिम्मत की, वक्त निकाला, मगर जिस ग़र्ज़ के लिये वक्त निकाला है आपने, उस ग़र्ज़ को पाने का यत्न करो। थोड़ी देर के लिये घर-बार से आये हो, घर-बार को भूल जाओ। यहां बैठे हो, जिस गर्ज़ के लिये बैठे हो, उसको समझने का यत्न करो। जो कोई और नई बात जो समझ में आ सकती हो, उसको ग्रहण करो, और इस वक्त से पूरा फ़ायदा उठाओ।

पहली बात तो मैं आप सब से अर्ज़ करना चाहता हूं वह यही है कि यहां पर कोई भी किसी खास समाज का रंग नहीं है। सब समाजें अपनी हैं। समझे ! बड़े अच्छे, नेक ख्याल से बनाई गईं थीं। उनकी गर्ज़ यही थी कि उसमें शामिल होकर हम अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ें। तो जिस समाज में रहकर अपनी आत्मा को आपने प्रभु से जोड़ें। तो जिस समाज में रहकर अपनी आत्मा को आपने प्रभु से जोड़ लिया आपका जन्म सफल हो गया। जिस स्कूल में रहकर एम.ए. पास हो गये वही स्कूल मुबारिक है। यह कभी ख्याल नहीं करो कि केवल एक ही समाज में रहकर आपकी मुक्ति है। अरे भई आपकी मुक्ति केवल प्रभु के ध्याने से है, नाम का ध्याना कहो, प्रभु का ध्याना कहो, अपनी आत्मा को उसके साथ जोड़ना कहो, इससे मुक्ति है। किसी समाज में आप रहो, सब समाजें अच्छी हैं। अपने-अपने बोले रखो, अपनी-अपनी समाजों में रहो। जिस चीज़ की तालीम समाजों में हमको दी गई है, उसको अपने जीवन में धारण करो। अब गौर से सुनिये महापुरूषों की बाणीयां आपको क्या सिखलाती हैं। आपको पता है, हर एक दफा कई महात्मा दुनियां में आये। सबका एक ही रोना रहा है। समझे। क्योंकि भई हमारी आत्मा प्रभु से जन्मों-जन्मों से बिछुड़ी पड़ी है, फिर से यह जुड़ जाये। बस। मनुष्य जीवन में यह काम आप कर सकते हो, आपका जीवन सफल हो जाय। तरीके तरीके से — तर्जे बयान अपना है, नफसे मज़मून यही रहा है। तो गौर से सुनिये महापुरूष क्या कहते हैं।

मगन सत्गुरू की भक्ति में अरे मन क्यों नहीं होता।
पडा आलस्या में मूर्ख रहेगा कब तलक सोता ॥
जो इच्छा है तेरे कट जायें सारे मैल पापों के।
प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता ॥

विषय भोगों में फंस कर न कर बर्बाद जीवन को।
दमन कर चित्त वृत्ति को लगाले योग में गोता ।।
नहीं संसार की वस्तु कोई भी सुख का हेतु है।
वृथा इनके लिये फिर क्यों समय अनमोल तू खोता ।।
नाम ही एक ऐसा है जो होगा अन्त को साथी
न पत्नी काम आयेगी न बेटा और कोई पोता ।।
भटकता जा बजा नाहक फिरे सुख के लिये सालिग।
तेरे हृदय के भीतर ही बहे आनंद का सोता ।।

जब जब भी महापुरूष दुनियां में आते रहे, आते हैं, और आते रहेंगे, वह बार-बार इसी बात पर जोर देते रहे, और देते रहेंगे, क्योंकि मनुष्य जीवन बार-बार नहीं मिलता है, बड़े भागों से मिलता है। यह चौरासी लाख जिया जून की सरदार जूनी है। इसमें यह ऐसा मौका है, समय है, Golden Opportunity (सुनेहरी मौका) है। यह वक्त आपके हाथ आया है जिसमें तुम अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ सकते हो। मनुष्य के जामे में पाँचों तत्व प्रबल हैं, खास करके आकाश तत्व जिसके सबब से आपके अन्तर विवेक बुद्धि है। Discrimination है। आप सत्य और असत्य का निर्णय कर सकते हो, सत्य की तरफ मुंह कर सकते हो। असत्य से मुंह मोड़ सकते हो। यह काम तुम किसी और जूनी में नहीं कर सकते। तो वह क्या कहते हैं, कि देख भई तू आत्मा है। आत्मा पाक और पवित्र है। परमात्मा पवित्रता का एक सोमा (स्त्रोत) है। प्रेम का, पवित्रता का, एक नशे और सरूर और निजआनंद का, उसी जाते-हक के तुम भी कतरे हो।

''कहो कबीर इह राम की अंश।''

तुममें कोई अलायश (मैल) नहीं है। जब तुम दुनियां में भेजे गये, तुम पाक और पवित्र थे। यहां आने से मन साथ हो गया। मन न होता तो दुनियां में यह काम ही न बन सकता। मन एक बड़ी अच्छी चीज भी है, और बड़ी बुरी चीज भी है। Like fire it is a good servant but a bad master. आग की तरह यह एक बड़ा अच्छा नौकर है। सारे काम तुम्हारे करेगा। रोटी भी पकायेगा, मशीनें भी चलायेगा। मगर उस वक्त तक, जब तक यह तुम्हारे काबू में है। जब आग तुम्हारे पर प्रबल हो जाये, फिर फूंककर फ़ना कर देगी। अगर मन साथ न लगे, यह दुनियां के साथ जुड़ ही नहीं सकता। उसका कारण यह है कि परमात्मा अति चेतन, महाचेतन, प्रभु है। हमारी आत्मा भी चेतन स्वरूप है। अगर चेतन स्वरूप, इस जड़, Material के साथ जुड़ना चाहती है तो कैसे जुड़े ? तो इसलिये महापुरूष कहते हैं कि ऐ आत्मा तू निरोल चेतन स्वरूप है।

''तू थी सत्नाम की गोती

तू सत्नाम की गोत वाली थी। समझे ! अब इसका ताल्लुक अगर दुनियां से जुड़ना है, यह शरीर है जड़ का, Matter का बना हुआ है। तो मन एक ऐसी चीज है, जो इतना सूक्ष्म है कि यह परमात्मा की तरफ मुंह कर सकता है, जुड़ सकता है, चेतन स्वरूप आत्मा से, और इतना स्थूल है कि जिसम, जो Material है, उससे जुड़ सकता है। तो इसलिये प्रभु ने यह मन हमें दिया, बड़े अच्छे, खास मतलब के लिये। मगर सिर्फ देखना यह है कि अगर इसका मुंह आत्मा की तरफ रहे तो इसका दुनियां में आना सफल हो जाये। अगर इसका रूख जिस्म की तरफ हो गया, यह जमीनी बन जायेगा। तो इसके रूख को बदलने का सवाल है। यह जो जिस्म मिलता है, हमें बरतने के लिये मिलता है। जिसम में इन्द्रियां लगी पड़ी हैं। उसके द्वारा जगत में काम करना है। समझे ! इसीलिये, इससे फायदा उठाने के लिये मिला था। मनुष्य जीवन में अगर आप इन मन और इन्द्रियों के झंझट से आज़ाद हो जाओ तो अपने आपकी होश आयेगी, तुम्हारी आत्मा देखेगी कि मैं सत्नाम की गोत वाली हूं।

कहो कबीर इह राम की अंश

अगर इनहीं में लम्पट रहा, न अपने आपकी होश रही, न अपने जीवन आधार की होश रही, असली घर को भूल गये।

तू निज घर वसियड़ा हौं रूल भसमे ढेरी।

गुरू नानक साहब फर्माते हैं कि हे प्रभु ! तू तो निज घर में बास कर रहा है, मैं मिट्टी में ढेर हो रही हूं, मिट्टी का रूप बन गई हूं। तो देखने वाली बात क्या है ? महापुरूष क्या कहते हैं, कि ऐ आत्मा तू स्वच्छ है। निजआनंद है। एक खुमार का समुन्दर, एक उभार है। तू आलायशों (विकारों) से पाक है। मन साथ दिया गया था, मनुष्य जीवन पाकर इसे यहां यात्रा करने के लिये, उसका ठीक इस्तेमाल न रहा। तो वह क्या कहते हैं कि घर-बार छोड़ों, जंगलों में जाओ, तो भी मन साथ है मुआफ़ करना। तो महापुरूष कहते हैं ? दुनियां में ही रहो मगर मन का रूख मालिक की तारीफ़ रखो, आत्मा के साथ। तो सत्स्वरूप हस्ती हमेशा यही कहती है कि भई समझने की बात है। Right Understanding पैदा करो। मनुष्य जीवन जो बड़े भागों से मिला है, इससे आप पूरा फ़ायदा उठाने का यत्न करो। कहते हैं हमारा कहना मान लो। इसमें तुम्हारा भला है। भीख महात्मा यह कहते है।

मन मान ले तू कहन हमारा।

भई मान लो। मनुष्य जीवन भागों से मिला है। यह बार-बार नहीं मिलता है।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जन्म गंवाया।

अगर इसमें यह काम नहीं किया तो जन्म बेकार। जब से हम परमात्मा की गोद से जुदा हुए, कभी तो थे ना उसकी गोद में ! जब आये थे, पाक और पवित्र, स्वच्छ थे। मन-इन्द्रियों के घाट पर जीव बन गये। अब मनुष्य जीवन में हम इन आलायशों से पाक हो सकते हैं, सवाल यह है। और किसी जूनी में नहीं। तो कहते हैं हमारा कहना मान लो भई। क्या कहना कहते हैं ?

भई प्राप्त मानुख देह हुरिया। गोबिन्दं मिलन की एह मेरी बिरिया ॥
अवर काज तेरे किते न काम ॥ भज केवल नाम ॥

मनुष्य जीवन भागों से मिला है। यह प्रभु के पाने का वक्त है। अरे भई तू और जो काम कर रहा है, वह तुझे प्रभु के पाने में मददगार नहीं हैं, दुनियां में लगाने वाले हैं। कोई ऐसा काम है जिसके करने से तुम अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ सकते हो ? कहते हैं साधु का संग करो। साधु किसको कहते हैं ?

साध प्रभु भिन्न भेद न भाई।

जिसकी आत्मा प्रभु का मुख बन गई, जुड़ गई, उसका नाम साधु है। जो जुड़ी है, तुमको उसके साथ जोड़ सकती है। उसका नाम साधु, सन्त और महात्मा है। उनकी सोहबत करो। उन्होंने अपनी आत्मा को तन मन के पिंजरे से आज़ाद किया। अपने आपको जान कर पिण्ड को अपनी मर्जी से छोड़कर, प्रभु का आनन्द ले रही है। जो उनके सन्मुख बैठे वह भी इसी आनंद को पा सकता है। कहते हैं, हमारा कहना मान लो। मनुष्य जीवन बार-बार नहीं मिलता।

यह तो समय मिला अति सुन्दर, शीतल हो बच घाम से।

यह समय बड़े भागों से मिला है, ठंडक को पाओ। दुनियां जल रही है, इस तपश से बच जाओ। तो यह महापुरूष कहते हैं कि भई तुम यह एक हमारा कहना मान लो। हम महापुरूषों का कहना न मानने के सबब से आज दिन तक दुनियां में आते रहे। मनुष्य जीवन भी शायद कई बार मिला होगा। मगर क्योंकि हमने उनका कहना नहीं माना, इसलिये बार-बार दुनियां में अब तक आते रहे। उनकी सोहबत में क्या मिलता है ?

सन्त संग अन्तर प्रभु डीठा।

प्रभु के देखने वाले बन जाओगे।

सत्गुरू मिले तां अखी वेखे।

जब सत्गुरू मिलेगा तो आँखों से देखने वाले बन जाओगे। वह आँख बन जायेगी, जिससे वह नज़र आता है।

नानक से अखड़ियां बेअन जिन डिसिन्डो मापिरी।

ऐ नानक, वह आँखें और हैं जिनसे वह (प्रभु) नज़र आता है। बात तो यह है। तो कहते हैं हमारा कहना मान लो। हम क्या करते हैं ? इन्द्रियों के भोगो-रसों में लिवलीन, इतने लम्पट हो जाते हैं, यह जो काम लेने के लिये मददगार मिले थे, इनके हाथों बिक रहे हैं। तो गुरू अर्जुन साहब ने फर्माया।

गुरू गृह वस कीना हौं घर की नार।

किसी महापुरूष से मिलोगे, पूर्ण पुरूष से, कहते हैं यह देह का घर तुम्हारे बस में आ जायेगा। तुम इस घर की रानी बन जाओगे। कौन सी नौकरानियाँ तुमको मिलेंगी ? फर्माते हैं —

दस दासी कर दीन भतार।

दस नौकरानियां, कहते हैं उस भतार ने, मालिक ने हमें नौकरानियां दे दीं। कौन सी नौकरानियाँ ? पांच कर्म इन्द्रियां और पाँच ज्ञान इन्द्रियां। अब यह इन्द्रियां हमको नाच नचा रही हैं। आंख की इन्द्री अच्छी सूरत देखकर, अच्छे नज़ारे देखकर खिच जाती है। कान की इन्द्री, बाहर के सुन सुनाकर हालात को दिल में खाहिश (इच्छा) फड़कती है। जबान की इन्द्री बाहर के रसों कसों को ले लेकर बाहर के ख्यालों का रूप बनती चली जाती है। ऐसे ही और दो इन्द्रियाँ, स्पर्ष से, सूंघने से, बाहर की दुनियां हममें बस रही है। बस। अब अगर इन इन्द्रियों को फैलाव से हटाओ, अन्तरमुख होओ, अपनी आत्मा को मन-इन्द्रियों के जाल से छुड़ाओ, तो हकीकत तुम में है। समझे।

दस इन्द्रे कर राखे बास। ताके आत्मे होय प्रगास॥

अगर तुम इन दस इन्द्रियों को बस में कर लो, Control में कर लो, Outgoing Faculties जिसके जरिये हमारी सुरत बाहर फैल रही है, इसको तुम Control (बस) में कर लो, तो तुम्हारे अन्दर प्रभु की ज्योति का विकास हो जायगा। वह तुम्हारे अन्दर है।

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं केहि विधि आवे हाथ।

चीज कहीं और हो, तुम उसको पाना चाहते हो, उसको वहां नहीं तलाश करते जहां पर वह है, तो वह कैसे तुमको मिलेगी ? अनुभवी पुरूष ने उसको पाया है। वह क्या कहता है, कहां पर है ? कहते हैं वह तो तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। वह तुम्हारा जीवन आधार है। उसी के आधार पर तुम्हारी आत्मा इस जिस्म के साथ चल रही है। समझे ! दम (स्वास) बाहर जाता है। मगर उसको Control कर रही है कोई ताकत। जब तक वह साथी, वह जीवन-आधार इसके साथ है, इस जिस्म का काम हो रहा है। जब वह साथी, वह आधार हटता है, वह साथी हम हैं, इस जिस्म की प्रलय हो जाती है।

तिच्चर वसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल। जां साथी उठी चलिया ताँ धन खाकुराल ॥

तो जिस जीवन आधार के सबब से हमारी आत्मा जिस्म के साथ कायम है, उसके साथ जुड़ो। उसकी तरफ तवज्जो दो। मगर कब करोगे ? जब तुम्हें अपने आपकी होश आयेगी। इस वक्त तुम्हारी आत्मा मन के अधीन है। मन इन्द्रियों के अधीन है। इन्द्रियों को भोग खैंच रहे हैं। तु जिस्म का रूप बन बैठे हो। अपने आपकी होश नहीं, अपने जीवन आधार की होश नहीं। यह हालत है इन्सान की। अनुभवी पुरूष जब भी आते हैं तो —

महापुरूष साखी बोलदे सांझी सगल जहाने।

वह सबको एक जैसा उपदेश देते हैं, As a man problem पेश करते हैं। वह (पूर्ण पुरूष) यह नहीं कहता कि ए हिन्दुओ सुनो, ए सिखों या ईसाईयो सुनो। वह कहते हैं ए आत्मा देहधारियो सुनो। ऐ मन सुन।

सुरत तू जाग री तेरा पिया बसे आकाश।

तो अनुभवी पुरूषों का नजरिया कुछ और है।

सत्गुरू ऐसा जानिये सो सबसे लये मिलाय जियो।

जो सबको मिलाकर बैठता है। सब आत्मा देहधारी हैं। आत्मा के Level से देखता है। जिस्म के लेबलों से नहीं। सारे लेबल मुबारिक हैं, जिस लेबल को लगाकर तुम प्रभु को पा गये। सच्ची बात तो यह है। तो जो महात्मा भी आते हैं, यही कहते हैं गला फाड़-फाड़कर। सिरदर्दी मोल ले लेकर। लोग उनको बुरा-भला भी कहते हैं, फिर भी वह कहते हैं, शायद किसी को होश आ जाये। सबसे बड़ा दान क्या है ? अन्न का दान भी है। कपड़े का दान भी है, बुद्धि का दान भी है। अरे भई सबसे बड़ा दान यह है, आप प्रभु से जुड़ो और लोगों को जोड़ो।

गुरूमुख कोट उधारदा दे नावें इक कणी।

अगर तुम्हारे पास है ही नहीं तो क्या दान करोगे ? यह दान जो है, यह तुमको भी छुड़ा देता है जन्म-मरण से, और दूसरे भी जो नाम के ध्याने वाले हैं, प्रभु से जुड़े हैं, वह भी छूट जाते हैं। इसलिये सारे महापुरूषों के उपदेश का सार क्या है, कि इन्द्रियों के भोगों-रसों से हटो, संयम का जीवन बनाओ, और नाम को ध्याओ।

जिन्नी नाम ध्याया गये मुसक्कत घाल। नानक ते मुख उझले केती छुट्टी नाल ॥

मनुष्य जीवन पाने की मुशक्कत सफल हो जायेगी, आपका मुख प्रभु की दरगाह में उजला हो जायेगा, आपके साथ और अनेकों जीवों का उद्धार हो जायेगा। यह महापुरूष कहते हैं। किसी महापुरूष की बाणी लो। ज़बांदानी (भाषा) अपनी रही, जो उस वक्त की थी, तरज़े बयान (वर्णन शैली) अपनी-अपनी है, नफ्से मजसून वही है। रोते सब एक से हैं। मुआफ

करना, अपनी-अपनी जबान में। कोई हू-हू करता है, कोई हाय-हाय करता है। सारे महात्मा आते हैं, बात एक ही कहते हैं। अरे भई मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है। हमारा कहना मान लो। हमारा जीवन इस तरह से सफल हुआ है। तुम्हारा भी सफल हो जाये। बस। बात तो इतनी है। तो यहां पर कई महापुरूषों की बाणी ली जाती है। कभी किसी की, कभी किसी की। पिछली दफा स्वामीजी महाराज की बाणी थी। आज गुरू अर्जुन साहब की बाणी आ रही है। गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं।

दिन रात कमाइयड़ो सो आयो माथे।

कि ऐ भाई, जो दिन रात तू कर्म करता है, वह माथे के लेख बन जाते हैं। क्या कर्म करते हैं ? कर्म कई तरह के हैं। एक तो जिस्म करके हैं, एक वचन करके, एक कर्म करके। मन करके भी जो ख्याल आये, वह भी कर्म है। ज़बान से जो कुछ इज़हार करते हैं, वह भी कर्म है। जो जिस्म द्वारा करते हैं, वह भी कर्म है। तो कहते हैं कर्म, जैसा बीज ख्याल का बोओगे वैसा ही काटोगे, उसी के मुताबिक हमारे माथे के लेख बन गये।

आप देखेंगे कि इन्सान कर्म करता रहता है। कर्म तीन किसम के हैं। एक क्रियमान कर्म हैं, जो हम रोज़-रोज़ करते हैं। एक हैं, प्रारब्ध कर्म जिसके मुताबिक हमारा यह जीवन बना है। समझे ! एक वह कर्म हैं जो अभी फलीभूत नहीं हुये। उसको सन्चित कर्म कहते हैं। तो जो कर्म करके फलीभूत हो गये, वह हैं प्रारब्ध, उसके मुताबिक जीवन बनता है, ग़रीबी-अमीरी बनती है, दुख-सुख आते हैं, आयु बनती है। क्रियमान कर्मों से यह सब कुछ होता है, जो पीछे क्रियमान कर्म किये। जो फलीभूत होने लगे, उसका हमारा यह जीवन बन गया। जो कर्म अभी भुगते नहीं,वह संचित हैं,अभी Store में बाकी हैं। वह सैंकड़ों जन्मों के कर्म एकत्र होते हैं।

धृतराष्ट्र से भगवान कृष्ण जी ने पूछा कि महाराज तुम जन्म से अन्धे हो। किस जन्म में आपने यह पाप किया था जिसका फल तुमको अब मिल रहा है ? तो फर्माने लगे कि सौ जन्म तक तो मुझे योग बल से पता है कि मैंने कोई ऐसा कर्म नहीं किया। फिर भगवान कृष्ण जी ने, योगीश्वर गति वाले थे, अपना योग बल दिया तो एक सौ छवां या सातवां जन्म था जिसमें यह कर्म था जिसका यह फल भोगा जा रहा था। बताओ, कर्मों की गति से कैसे छूट सकते हैं।

कर्म गति टारे नाहीं टरे।

Inexorable है Law of Karma. तो महापुरूष क्या कहते हैं ? अरे भई देख जैसे तू कर्म करता है उसके मुताबिक तेरे यह लेख माथे के बनते हैं। नये कर्मों का जैसा बीज बीजोगे, वैसा काटोगे। यह ख्याल करो। As you sow so shall you reap. यह ख्याल करो कि तुम बीजो तो कीकर और खाने की उम्मीद रखो अंगूर, तो यह कभी न होगा।

लुकमान थे। लुकमान हकीम का आपने नाम सुना हुआ है। एक Landlord (ज़मींदार)

था, उसके पास जाकर नौकर हो गया। तो Landlord (ज़मींदार) ने कहा, भई ज़मीन में अच्छे किसम के जौ, वह जो होते हैं ना Barley oats, गोटे जौ, टीन के डब्बों में बन्द आते हैं, वह जौ बीज आओ। कहने लगा बहुत अच्छा, बीज दिया। पर उसने क्या किया, वह जौ नहीं बीजे, मामूली किसम के जौ बीज दिये। जब दो तीन महीने के बाद खेती तैयार हो गई, मालिक ने पूछा, क्यों भई खेती तैयार हो गई ? कहने लगा जी हाँ, चलिये, देखिये। जाकर देखा तो मामूली जौ थे। तो कहने लगे, लुकमान ! देख मैंने तुमको कहा था कि आला किसम के जौ बीजने हैं। यह क्या कर दिया है ? कहने लगा, महाराज इसमें शक नहीं कि मैंने मामूली जौ बीजे हैं। मगर मैं एक बात जरूर करता रहा हूं। अरे भई व क्या ? कि हर रोज़ इस खेत के सिरहाने बैठकर कहता था कि हे प्रभु, इन को Barley Oats बना दो, अच्छे किसम के जौ बना दो। कहने लगे तुम बड़े बेवकूफ हो, बीज तो बीजते हो तुम मामूली जौ का, और उम्मीद रखते हो Barely Oats की। कहने लगे, असल में बात यह है कि मैं जब आपकी तरफ नजर मारता था, आपका जीवन बहुत गन्दा था, लोगों का खून निचोड़ते थे, गला काटते थे। मगर रोज़ मैं देखता कि तुम हाथ जोड़ते हो कि हे खुदा मुझे बख्श दे। कहता है, अगर यह गुनाह करते हुये भी बख्शा जाये, और आगे भी करता चला जाता है, तो यह मामूली जौ असली जौ क्यों नहीं बन सकते ? बात समझने की है। अरे भई रेलवे लाईन डालने से पहले तुम्हारा अखत्यार है, जिस तरफ मर्जी डाल लो। जब एक बार डाल दोगे तो ट्रेन उसी पर जायेगी। रूचि बनाओ।

महापुरूष क्या कहते हैं ? अरे भई उनके मिलने से हमारा Angle of Vision बदलता है, रूचि बदलती है। वह Mystery of Life को (जिन्दगी के भेद को) बयान करते हैं, ऐ आत्मा ! तू निरोल चेतन स्वरूप आत्मा है, निर्मल है। मन और इन्द्रियों के घाट जो बरतने के लिये तुम्हें मिले थे दुनियां में, इन ही में तू लम्पट हो रहा है। नतीजा क्या है ? इन्सान के अन्दर पांच तत्व प्रबल हैं। अब बुरे कर्मों के करने से हमारे वह तत्व क्षीण होते हैं। जिसका आकाश तत्व क्षीण हो गया, वह हैवान (पशु) की जूनी में जायेगा। क्यों साहब जैसा-जैसा Lower (हीन) कर्म करेगा उतनी नीची जूनी में चले जायेगा ना। अगर उसको Develop करेगा, फिर मनुष्य जीवन मिले तो यह काम करेगा। तो मनुष्य जीवन पाकर हमने विवेक को बढ़ाना था, सत्य-असत्य का निर्णय करना, आकाश तत्व से काम लेना था। जो नशों में और बुरे कामों में लम्पट हो गये, आकाश तत्व प्रबल न रहा, नीची जूनी में चले गये। आप समझे। महापुरूषों की बाणी विचारने के लिये है, केवल पढ़ने के लिये नहीं। बड़े प्यार से समझा रहे हैं। क्या कह रहे हैं ? क्या कहते हैं, ''दिन रात कमाइड़ो सो आयो माथे।'' जो दिन रात तूने कर्म किये थे, वह तेरे मत्थे के लिखे बन गये। उसके मुताबिक यह जीवन बन गया। आप गरीब हो, हाय हाय करते हो। भई तुमने बीज बीजा है। एक आदमी सुखी हो रहा है, बुरे कर्म आगे भी कर रहा है। वह पिछले कर्म फलीभूत हो रहे हैं। आगे का बिगाड़ रहा है। समझे ! एक आदमी

के मर रहे हैं, कोई जीता ही नहीं। हाय-हाय करता है। अरे भई लेना-देना इतना ही था, खत्म हो गया। तेरा किया है। बात समझ रहे हो ! यह बात नहीं कि दूसरे तुमको क्या कहते हैं। तुम्हारी नीयत में क्या हो रहा है। मन करके भी एक कर्म हो रहा है तो वह बीज बीजा गया। ज़बान से जो कर्म, ख्याल बीजा गया, वह भी बीज बन गया। कर्म से तो Execute (पूरा) हो गया। तो जैसा कर्म करोगे वैसा काटोगे। बड़ी पक्की बात है। आप कहेंगे भई यह तो बड़ा मुश्किल काम बन गया। कैसे कर्म तुमने किये, छुप-छुपकर किये। लोग न देखें। तो बुरे कर्म की निशानी क्या है आपको पता है, Criterion क्या है, कसौटी क्या है बुरे कर्म की ? जिस कर्म को करते हुये तुमको छुपकर करना पड़े वह बुरा कर्म है। जिस कर्म को कर के फिर तुमको कोई कहे तो झूठ बोलना पड़े। बस। यह कसौटी है बुरे कर्म की। छुपकर करो, लुक कर करो, बीज तो बीजा गया। बीज वही फूटेगा। आप देखेंगे सदाचार की कितनी जरूरत है।

महापुरूष क्या कहते हैं ? किसी का दिल नहीं दुखाओ। सबके अन्तर परमात्मा है। दिल तुम कई तरह से दुखा सकते हो। किसी का रूपया लेकर, किसी का हक मारकर, किसी का खून निचोड़कर, किसी को धोखा देकर, किसी को झूठ फरेब करके। समझे ! किसी को ईजा (दुख) पहुंचाकर। कई तरीकों से दुख दे सकते हो। अगर प्रभु को पाना चाहते हो, प्रभु घट-घट में है और उसकी अंश, यह आत्मा सबमें है। अगर तुम उसको धोखा देना चाहते हो तो प्रभु को कैसे पा सकते हो ? इसलिये कहा अहिंसा परमो धर्मः। धर्म क्या है ? धर्म उसको कहते हैं जिसका नतीजा सुख हो। और कहते हैं परम धर्म क्या है ? यह कि किसी का दिल न दुखाओ। गुरूबाणी में भी यही कहा है।

जे तो पिरया मिलन दी सिक। तां हिया न ठाहीं केही दा ॥

अगर तुम प्रभु को पाना चाहते हो तो किसी का दिल न दुखाओ। बस। पहली बात। सच बोलो, झूठ-फरेब से बचो, और ब्रह्मचर्य की रक्षा, नेक-पाक ख्याल, मन, वचन कर्म से। सबके अन्तर परमात्मा है, किसी से तुम्हें नफरत न हो। ग़रीब हो अमीर हो, सबसे प्यार हो। और कोई दुखी दर्दी है, उसका दुख-दर्द बान्टो ! बस। बांटकर खाओ। यह है क्रियमान कर्म। महापुरूष के पास जाते हो, इसको Set (नियंत्रित) करके जाओ आईन्दा के लिये। वह प्रारब्ध कर्म को वह खत्म कर दे, उसी वक्त मौत हो जाये। संचित कर्म के लिये वह क्या करता है, और क्रियमान कर्मों को सीमन्ट करने के लिये क्या करता है ? अर्न्तमुख नाम का धियाना दे देता है। वह निःकर्म हो जाता है। काम करता हुआ निःकर्म।

सो नेहकर्मी जो सबद बीचारे।

साथ अन्तर इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर आत्मा को प्रभु से जोड़ता है। रोज़-रोज़ उस महारस को पाकर, इन्द्रियों के भोगों रसों की चाह ही नहीं रहती। अब तो हटाना पड़ता है ना, फिर चाह ही नहीं रहती। भूख ही न हो, रोटी खाई हुई तो और खाने आयें तो जी नहीं

करेगा। तो इस तरह से प्रारब्ध तो भुगता दी जाती है। आत्मा को प्रभु के साथ जोड़कर दो काम बनते हैं। एक तो आत्मा बलवान हो जाती है, Bread of Life जिन्दगी की रोटी मिलती है, आत्मा बलवान हो जाती है। उससे क्या होता है ? दुनियां के दुख-सुख जो प्रारब्ध कर्मों के अनुसार आते हैं, वह आते तो जरूर हैं, मगर उतने दुखदाई नहीं रहते, Pinching नहीं रहते। जैसे मार पड़ रही हो, दो चार मजबूत आदमी हों, एक उनमें बड़ा कमजोर हो, एक डन्डा कमजोर आदमी को पड़े, हाय हाय करके चीख़ता है, पुकारता है, मजबूत आदमी कहता है, यार पड़ी तो बहुत है, मगर असर नहीं। आत्मा बलवान हो जाने के कारण, नाम की खुराक इसको मिलने से, उसको दुख-सुख आते भी हैं, यह नहीं कहो कि नाम लेने से किसी के मरेंगे नहीं, दुख-सुख नहीं आयेगा। मगर उसका असर नहीं होगा। संचित कर्म जल जायेंगे, नि:कर्म जो हो गया। कौन भुगतेगा। तो इसलिये गुरूबाणी में आया है —

गुरू गुण केही, जगत गुरा जो कर्म न नासै।

ऐ जगत गुरू, तेरे चरणों में आने का फायदा ही क्या है, जो कर्मों का नाश न हो।

सिंह शरण कत जाईये जो जुम्बक ग्रासै।

शेर की शरण जाने का अरे भई क्या फायदा है जो वहां भी जाकर गीदड़ भमकियां मारें। बात समझ आ गई ? तो महापुरूष क्या कहते हैं ? मनुष्य जीवन भागों से मिला है। किसी महापुरूष के चरणों में बैठकर कर्मों को Wind-up करा लो, तुम्हारा जीवन सफल हो जाये। उपदेश क्या करते हैं ? अरे भाई जो तेरे माथे का लेख बना है ना, तुमने बनाया। You are the maker of your own destiny. जो पीछे किया है, अब भुगत रहे हो। जो अब बीज बीज रहे हो, वह आगे काटोगे। तो गुरू अर्जुन साहब बड़े प्यार से समझा रहे हैं।

दिन रात कमाइयडो सो आयो माथै।

एक लूला है, लंगड़ा है। समझे ! एक ग़रीब है, दूसरा अमीर है। अपने लेख लिखाये हैं।

जिस पासै लुकाईन्दड़ो सो वेखी साथे॥

कहते हैं तू छुप-छुपकर पाप करता है। किससे छुपा रहे हो ? लोगों से ? वह देखने वाला तो अन्तर बैठा है तुम्हारे, उससे कैसे छुपाओगे ? दुनियां से तो छुपा लोगे। कितने दिन ? आखर ज़ाहिर हो जायेगी गति। समझे ! Cat must be out of the bag. कब तक छुपेगी ? वह तो उबलेगी ? दूसरे से छुपाते हो ना, अरे भई पांच साल का बच्चा हो, हमारे हजूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) फर्माया करते थे, उसके पास बैठकर तुम कोई पाप नहीं करते। वह शहिन्शाहों का शाहिन्शाह परमात्मा, तुम्हारे घट में बैठा है। तुम्हारे हर एक कर्म को देख रहा है। उसके सामने तुम पाप कर सकते हो ? जैसा बीज बीजोगे, यह अटल कानून है, वैसा ही

काटोगे। बस। होश कर लो भई, देखो तो तुम क्या कर रहे हो, किस तरफ अपनी Line Draw कर रहे हो। अगर बम्बई को जाना है तो पिशावर की तरफ Line Draw कर दी, तो कब पहुंचोगे ? यह सोचने की बात है। और यही महापुरूष कहते हैं। यह जो क्षेत्र है, मनुष्य जीवन जो मिला है, यह खेती है जिसमें हम बीज बीज रहे हैं।

Man in the make है, जैसे बच्चा माता के पेट में बनता रहता है ना, इसी तरह मनुष्य जीवन में इन्सान Higher (उच्च) जीवन के लिये तैयारी करता है। जैसा करोगे, वैसा भरोगे। बड़ी मोटी बात। यह कभी ख़्याल नहीं करो कि कीकर बीजो और अंगूर काटो। यह बात समझने वाली है। हम इसकी तरफ़ तवज्जो ही नहीं देते। गंदगी का ढेर लगा पड़ा है मुआफ करना, उपर रेशमी कपड़ा डाल देते हैं बड़ा खुशनुमा, मगर उससे क्या खुशबू आयेगी ? कभी नहीं ! जैसी हृदय में चीज़ बस रही है, जो तुम वचन कहते हो, उसी से असर लेकर आते हैं। जो हवा आग के साथ लगकर आयेगी वह गरम होकर आयेगी। जो हवा बर्फ़ के साथ लगकर आयेगी वह ठंडी होकर आयेगी। जिस हृदय में प्रभु का प्रेम है, सबका भला है, Peace be unto all the world over, —

नानक नाम चढ़ती कला, तेरे भाणे सरबत का भला।

अरे भई उसके वचनों में भी ठंडक है। समझे ! तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। किस से तुम छुपा रहे हो ? अरे भई लोगों से छुपाने से क्या होता है।

लोग पतीने किछ न होवे नाही राम अयाना।

राम, वह जो रम रहा है। तुम्हारा जीवन आधार है। वह कोई अन्जान बच्चा है जो भूल जायेगा ? जैसा बीज बीजोगे, वैसा काटोगे। अगर इन कर्मों को Wind up करना है तो किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में जाओ। वह तुम्हारे आगे कर्म Set कर देगा। आत्मा नाम के साथ लगने से बलवान होगी। प्रारब्ध कर्मों के दुख असर नहीं करेंगे। और अगले संचित कर्म जल जायेंगे, आना-जाना खत्म हो जायेगा।

संग देखे करनहारा काहे पाप कमाइये।

कहते हैं भई किसलिये पाप कर रहे हो ? वह तो देख रहा है तुम्हारे हर एक कर्म को। किससे छुपा रहे हो ? कोई गैर तो नहीं कि दूसरे ने देखना है। तुम्हारे अन्तर बैठा वह देख रहा है तुम्हारे हर एक कर्म को। फिर क्यों पाप करते हो ? एक पांच साल का बच्चा हो, उसके सामने तुम कोई पाप नहीं करते, उससे दरपरदा (छुपकर) करते हो। तो फिर वह जो अन्तर बैठा है, हमारी रूचि को भी देख रहा है, मन के फुरने को भी देखता है, उससे पाप कैसे छुपेंगे ? क्यों कर रहे हो ?

हजरत यूसुफ का जिकर आता है कि उसको जुलेखा ने या किसी ने बुलाया, अन्तर कमरों के अन्दर ले गई। वहां पर वह बुत, जिसकी पूजा करते थे, उस पर पर्दा डाला। यूसुफ ने पूछा कि अरे भई क्या करते हो ? कहने लगी यह मेरा देवता है, इसके सामने कोई पाप नहीं करना है। कहने लगे अरे वह मेरा खुदा तो हर वक्त देखता है। तो वह परमात्मा तो तुम्हारे घट में बैठा है। तुम्हारी हर एक चीज को देखता है। वह पूर्ण पुरूष कहो, या जिस घट में वह परिपूर्ण परमात्मा प्रगट है वह तुम्हारे साथ बैठा है। उससे कैसे छुपा सकते हो ? इसलिये कहा है —

गुरू को सिर पर राखते चलते आज्ञा माहिं।
कहे कबीर तिस दास को तीन लोक डर नाहि ॥

जो उसको हाजर-नाजर समझता है। वह नाम देकर साथ हो बैठता है, Christ Power कहो, गुरू पावर कहो, वह जिसम नहीं है, वह परमात्मा की ताकत है जो खण्डों-ब्रह्मण्डों को लिये खड़ी है। जब वह उसके साथ जुड़ता है, साथ हर वक्त Watch करती है, उसको धोखा कैसे दे सकते हो ? किसी समाज में रहो भई, काम तो यही करना है।

सुकृत करले, नाम सिमर ले, खबर नहीं कल की।

नेक कर्म करो। सदाचारी बनो। इन्द्रियों के भोगों-रसों से हटो। संयम का जीवन बनाओ। Ethical Life is the stepping stone to spirituality. यह पहला ज़ीना है।

सगल धर्म में श्रेष्ठ धर्म, हर का नाम जप निर्मल कर्म।

गुरू अर्जुन सहाब से पूछा गया कि सबसे ऊंचा धर्म कौन सा है ? कहने लगे सबसे श्रेष्ठ धर्म है, नाम को जपो, परिपूर्ण परमात्मा की याद दिल में बसाओ, उससे जुड़ो, और निर्मल कर्म करो। यही सारे महापुरूष कहते हैं। Blessed are the pure in heart for they shall see God. जिनका हृदय पवित्र है, वह मुबारिक हैं, क्योंकि केवल ऐसे ही हृदय प्रभु को पा सकेंगे, देख सकेंगे। यम, नियम के आसन इसीलिये बनाये गये हैं। Eightfold path of the Buddha इसी गर्ज से बनाया गया। Christ ने जो Sermon of the mount दिया है उसका मतलब भी यही है। जैनियों के चार जो व्रत हैं, वह भी यही सिखलाते हैं। अरे भई सारे महापुरूष एक ही बात कहते हैं। श्रेष्ठ धर्म यह है, निर्मल कर्म करो, जीवन नेक-पाक, सदाचारी बनाओ, संयम का बनाओ, और प्रभु के साथ जुड़ो। यह सब से ऊंचा धर्म है। किसी समाज में रहो, यही काम करना होगा। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। गौर से सुनिये, कहते हैं क्या करो ? फिर यह भी खोल के वही बयान करेंगे। सौ सयाने एक ही मत।

सुकृत कीजे नाम लीजे नरक मूल न जाइये।

कहते हैं गर तुम नेक-पाक जीवन बना लो और नाम के साथ लग जाओ — नाम किसको

कहते हैं ?

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

वह परमात्मा अनाम है। जब वह इज़हार में आया, उसको कहते हैं नाम। जो इज़हार में आई ताकत परमात्मा की खण्डों ब्रह्मण्डों को लिये खड़ी है, उसका नाम है नाम। उसके अनेकों नाम रखे महापुरूषों ने। किसी ने उसको राम कहा, अल्लाह कहा, वाहेगुरू कहा, अनेकों नाम रखे हैं। इन सब नामों पर हम कुर्बान हैं।

बलिहार जाओं जेते नांव तेरे हैं।

मगर नामी को पकड़ो, कहते हैं नामी के साथ जुड़ो। उसके लिये, सुकृत, सदाचारी जीवन बनाओ, कहते हैं तुम नरकों में नहीं जाओगे। 'नरक मूल ना जाइये।' बिल्कुल नहीं जाओगे। जो नेक काम हैं, देखिये एक बात समझने वाली है, भगवान कृष्ण जी ने गीता में फर्माया है कि नेक और बद कर्म जीव को बान्धने के लिये एक जैसे हैं, जैसे लोहे की बेड़ी और सोने की बेड़ी। नेक कर्म करो तो भी नि:कर्म नहीं हुए। स्वर्ग मिलेगा, मगर फिर आना पड़ेगा। बद कर्म करो, नरकों में जाओगे। यहां दुखी होओगे, बार-बार आना पड़ेगा, मरना पड़ेगा। कहते हैं, अगर तुम नि:कर्म हो जाओ। नाम के साथ लग जाओ, नि:कर्म कौन होता है ?

सो नेहकर्मों जो सबद बीचारे।

शब्द और नाम एक ही मायनों में आया है। जो नाम के साथ लग गये, वह नि:कर्म हो गये। वह देखता है कि वही कर रहा है। मैं नहीं कर रहा। आँख बन जाती है। तो सदाचारी जीवन बना करके वह क्यों नरकों में जायेगा ? कभी नहीं जायेगा। जो आज तुम मुश्किल कहो, दुख कहो, सह रहे हैं, यह अपने ही माथे के लेख लिखे पड़े हैं।

अनहोनी होवे नहीं होनी हो सो हो। तुलसी यह बिचार के रहो खाट पर सो॥
बनी, बनाई, बन रही, और बनेगी नाहिं। तुलसी यह बिचार के मगन रहो मन माहिं॥

प्रारब्ध, जैसी बन गई है, वह बदलनी नहीं। पुरूषार्थ करो। कर्म करो, इसलिये, ताकि तुमको धोखा न रहे। होना वही है जो होकर रहेगा। जिसका मरना ही है, जितनी उम्र में जाना है, जरूर जाना है। ग़रीबी, अमीरी, मरना, जन्म, दुख और सुख, यह कर्मों के लेख हैं। इसी में हम ग़लतान रहते हैं। यही नहीं बदलती। जहां हम लाईन बदल सकते हैं, उस तरफ हम तवज्जो नहीं देते।

पहिले बनी प्रारब्ध पीछे बना शरीर।

कहते हैं फिर —

तुलसी यह आश्चर्य है मन नहीं बान्धे धीर।

हम जिसमें नहीं कुछ कर सकते, उसके लिए तो दिन रात लग पड़े हैं। और जहां कुछ कर

सकते हैं, उस तरफ तवज्जो नहीं देते। नतीजा क्या है ? उस तत्वों का नाश होता है। ऊंची जूनी से नीची जूनियों में चला जाता है। आप कहेंगे फिर हमको कर्म नहीं करना चाहिये। कर्म इसलिये करना चाहिये कि हमें अभी यह पता नहीं कि क्या करना है, क्या नहीं करना। अगर पता हो तो फिर कोई जरूरत नहीं। फिर भी कर्म इन्सान करता है। यह उसका धर्म है, जब तक शरीर है। मगर कर्म करते हुए नि:कर्म हो, जब काम बनेगा। पता हो, पता नहीं, इसलिये आ सकता है कि यह मैं नहीं हूं, शायद यह हो जाता। इसको दूर करने के लिये यह कर्म करो।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, ''सुकृत कीजे, नाम लीजे, नरक मूल ना जाइये।'' बिल्कुल नहीं जाओगे। बड़ी गारन्टी दी है। महापुरूषों की गारन्टी है मुआफ करना। हजरत मुहम्मद साहब ने कहा कि अगर तुम दो उजबों को, गौर से सुनिये, जो दो होटों के दर्मियान है, और वह उजब जो दो रानों के दर्मियान है, अगर उसको काबू में कर लो, तो मैं तुम्हारा खुदा की दरगाह में ज़ामिन हूं। यही तुलसी साहब ने फर्माया है।

सत् वचन आधीनता परतिरिया मात समान। याहू ते हरि ना मिलें तुलसीदास ज़मान।

मैं ज़ामन हूं। यही गुरू अर्जुन साहब फ़रमाते हैं। ''सौ सायने एक ही मत।'' तो बड़े प्यार से यह बात समझने की है। हम पढ़ छोड़ते हैं। पढ़ना काफी नहीं है, समझो क्या है। उसको अमल में लाओ। तुम नरकों में नहीं जाओगे। बड़ी साफ बात कहते हैं। ''गुरू पीर हाँमां ताँ भरे जाँ मुरदार ना खाय।''

आठ पहर नाम सिमर चले तेरे साथे।

कहते हैं आठ पहर दिल रात, चौबीस घन्टे। आठ पहर कहते हैं, तीन घन्टे का पहर होता है। कहते हैं चौबीस घन्टे नाम के साथ लगे रहो। यही एक चीज है जो तुम्हारे साथ जाने वाली है। सुखमणी साहब की दूसरी अष्टपदी में गुरू अर्जुन साहब ने बड़ा निर्णय किया है।

जै पैन्डे महा अन्ध गुबारा। वहां नाम संग होत उजयारा।

कहते हैं पिण्ड से निकलो, वहां अन्धेर-गुबार है। वहां नाम प्रकाश होकर चलेगा।

नाम जपत कोटि सूर उजयारा।

सनातनी भाईयों में, जब अन्त समय आता है, कहते हैं जल्दी करो दीवा मंसाओ, नहीं तो बेगता मर जायेगा। जीते जी अगर ज्योति हो तो मरकर क्यों अन्धेरे में जायेगा। बात समझ आई ? फिर कहा है।

जै पैण्डे तुझे तृखा आ करखै।

जिस रस्ते में जाकर तुम्हें प्यास तंग करती है —

वहां नाम हर हर अमृत बरखै।

अमर बून्द मिलती है नाम की। तो यह एक ऐसा तोशा है जो साथ जाने वाला है। फिर फर्माया है, यह कहां से मिलेगा ? सवाल यह रह गया ना ! नाम को जो हर वक्त लगे रहना है उसके साथ, यह नाम की दात कहां से मिलती है ?

बिन गुरू पूरे नाम न पाया जाय। सिद्ध साधक रहे बिललाय।

किसी अनुभवी पुरूष की कृपा से।

सन्त संग अन्तर प्रभु डीठा।

''कृपा करे ताँ'' ऐसी हस्ती का मिलना उस मालिक की कृपा से होगा। वह क्या कहता है ?

हर हर नाम धियाय।

बात वहीं आ गई। तो यहां भी यह कहकर आगे आप ही बयान करते हैं कि यह नाम का चौबीस घन्टे धियाने का जो मज़मून है, यह कहां से मिलेगा ? यह नाम है कहां ? इसकी समझ कहां से आयेगी ? आगे फर्माते हैं।

भज साध संगत सदा नानक, मिटे दोख कमाते।

कि साधु संगत करो भई। बस। यह नाम की दौलत वहां से मिलेगी।

साध के संग वस्तु अगोचर मिले।

अगोचर वस्तु कौन सी है भई ?

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा। अत रस मीठा नाम प्यारा।

वह नाम जो है, वह अगोचर है, वह अदृष्ट है। बड़ा प्यारा नाम है। बड़ा मस्ती देने वाला नाम है।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

वह कहां से देते हैं ? कहते हैं —

नौ निधि अमृत प्रभु का नाम देही में इसका बिसराम

तुम्हारे अन्तर में है। इन्द्रियों के घाट से अन्तरमुख हो, और फिर मौजूद है। उसकी निशानी क्या है ?

नाम जपत कोट सूर उजयारा।

ज्योति का विकास होगा। कहते हैं, यह तुम्हारे अन्तर में है। नाम को जपो, जन्म-मरण खत्म हो जाये। मनुष्य जीवन सफल हो जायेगा। किसी समाज में रहो, काम तो यही करना

है। बड़े प्यार से समझा रहे हैं। कहते हैं कि साधु की संगत करो। साधु किसको कहते हैं ? साधु हमारी ही तरह से इन्सान है, याद रखो। मगर उसमें कुछ फ़ज़ीलत (बड़ाई) है। हमारे अन्तर काम बस रहा है, क्रोध बस रहा है, ईर्षा द्वेष बस रहे हैं। लब-लालच बस रहा है। अहंकार बस रहा है। मोह बस रहा है। Overflow कर रही हैं यह चीज़ें। कीचड़ में लिबड़े पड़े हैं। और वह इनसे आज़ाद है। उनमें कौन सा है ? हमारे अन्तर तो बच्चों का मोह और रूपये का है लब लालच। उसमें क्या है ? उसके अन्तर —

सुभर भरे प्रेम रस रंग, उपजे चाव साध के संग।

वह प्रभु के प्रेम, रस और नशे के Overflowing (लबालब भरे) प्याले होते हैं। सबका भला चित में बस रहा है। किसी का बुरा नहीं। उनको महारस नाम का मिला है, दुनियां के रस फीके हो गये।

बिखै बन फीका त्याग री सखिये। नाम महा रस पियो ॥

विषय विकारों का रस ए सखी फीका है। नाम के महारस को पियो। इससे जीवन सफल होगा।

जब ओह रस आवा, एह रस नहीं भावा।

दुनियां के रस फीके पड़ जायेंगे। वह कहां है ? तुम्हारे अन्तर है। अदृष्ट और अगोचर है। जब तक अदृष्ट और अगोचर नहीं बनते।

एवड ऊँचा होवे कोय, तिस ऊंचे को जाने सोय।

तभी जानोगे। जब उसी Level पर जावोगे। तो कोई भी जो अपने आप जा सकता है, जाये। न जा सके तो किसी की मदद ले ले, उसका Contact मिल जाये, अन्तर की थोड़ी पूंजी मिल जाय।

सन्तन मोको पूंजी सौंपी उतरियो मन को धोखा।
धर्मराय अब क्या करेगो जब फाटो सगलो लेखा ॥

बात समझ आई ? बड़े प्यार से समझा रहे हैं। खोल-खोलकर समझा रहे हैं। यह कहकर अब आगे कुछ और फिर इसी मज़मून को और ज़ोर से बयान करते हैं। गौर से सुनिये।

बलबन्च कर उदर भरें मूर्ख गंवारा। सब किछ दे रहिया हर देवणहारा ॥

कहते हैं, प्रभु ने, जैसे बीजे हैं वैसे देने वाला है बाकायदा।

करनी वहे कलाम।

उसकी कलाम की जो कलम है ना, हमारे कर्मों के अनुसार चलती है। वह दे रहा है। फिर भी यह छुप-छुपकर क्या करता है, पेट को भरने के लिये ? लोगों के गले काट रहा है। वह

और कर्म बुरे बनाता चला जाता है। बलबन्च कहते हैं छुपने को। लुक-छुप कर पेट भरने के लिये, कहते हैं यह आ गये। वह दे तो रहा है। मिलेगा वही जो मिल रहा है। मगर अपने कर्म और बिठा और कर्जा सिर पर चढ़ा रहा है। बस। ऐ इन्सान तू क्या कर रहा है ? देखने वाला तुम्हारे अन्तर बैठा है। उससे कैसे छुपोगे ? बात तो यह है। दुनियां से तो छुप जाओगे कुछ दिन के लिये। आखिर फिर भी जाहिर हो जायेगा। कब तक मुलम्मा रहेगा ? समझे। मैं आपको कहूं, दुनियां में क्या, परमार्थ में भी बड़ी Black Market चल रही है। ज़ाहिरीदारी कुछ है, अन्तर में कुछ और है। नतीजा क्या है ? जब वह अन्तर की बात आखिर ज़ाहिर हो जाती है तो लोग कहते हैं, It is all Gurudom ''किसी ने खोती बाई किसी ने पोथी बाई।'' Business व्यवहार बन गया। बस। ऐसे महात्मा मुझे मिले हैं। गुरू और शिष्य हैं, नंग-धड़ंग हैं। गुरू का बारह लाख जमा है। चेले का सात लाख जमा है। गुरू शिष्य से छुपा रहा है। शिष्य गुरू से छुपा रहा है। जो उनके पीछे लगेंगे उनको क्या मिलेगा ? आप बतायें ! कितनी अधोगति हो रही है। बड़ी भारी Black Market. इन्हीं हालतों को देख-देखकर हमारा मन साधुओं, सन्तों से नफ़रत करता है। सच्चे के साथ झूठे, सूखी लड़कियों के साथ गीली लकड़ियाँ भी जल रही हैं। मगर सच्चे महात्मा के बगैर जीव की न कल्याण हुई, न हो सकती है। बड़े प्यार से समझा रहे हैं। आगे और सुनिये —

दातार सदा दयाल स्वामी काहे मनों बिसरिये।

कहते हैं वह मालिक दातार है। हमेशा दात करता है। उसको क्यों बिसारना चाहिये ? उसका शुकराना करना चाहिये। हम क्या करते हैं ?

दात पियारी विसरिया दातारा। जाणें नाहीं मन बिचारा।

दातार को भूले जाते हैं। दातें प्यारी हो जाती हैं। नतीजा क्या है ? उसको भूल गये। क्या करते हैं , आपको पता है ? हर एक को प्रभु कुछ न कुछ दे रहा है। जितना दे रहा है, उसका तो शुकराना चाहिये ना ! हम शुकराना नहीं कर रहे। गुरू अर्जुन साहब ने एक पूरी अष्टपदी सुखमणी साहब में शुकराने में दी है।

जै प्रसाद छत्ती अमृत खायें। तिस ठाकुर को रख मन मांहि॥

जिसकी कृपा से तुमको हर एक तरह का खाना मिल रहा है। उसका शुकराना करो।

जै प्रसाद बसो सुख मन्दर। तिसे धियावो सदा मन अन्दर॥

जिसकी कृपा से तुमको रहने की जगह मिली है, उसका शुकराना करो। हम क्या करते हैं ? दस चीज़ें जो मिल रही हैं, उसका शुकराना नहीं है। एक चीज़ नहीं मिली, किसी के पास जाओ, भई फलानी चीज़ नहीं मिली बाकी सब ठीक है। अरे भई जो ठीक है उसका शुकराना करो। उस एक चीज़ के कारण, जो नहीं मिली, दिल है खोट रखता है। नतीजा क्या है ? न

उसका शुकर करता है, न आगे चीज मिलती है।

दस वस्तु लै पीछे पावे। एक वस्तु कारण बिखोट गवावे ॥
दस भी न देय, इक भी हर ले। तौ मूढ़ा कौ कहावे ॥

बताओ अगर वह भी ले लेवे तो ! भई जितना मिला है, उसका शुकर करो जो तुझे दे रहा है। अगर चीज़ नहीं मिली, उसके वास्ते प्रार्थना कर दो, यह अलेहदा बात रही। मगर उसके कारण दातों पर भी शुकरगुज़ार न होना, यह कहां का कायदा है ?

भाई गुरदास जी ने ज़िकर किया है, कि एक चूहड़ी थी, भंगन जिसको कहते हैं। इन्सान की खोपड़ी थी, उस में मांस, शराब में बना हुआ था। वह ले जा रही थी, कपड़े से ढांप कर। पूछा यह क्या है ? कहने लगी जी इन्सान की खोपड़ी है, उसमें मांस बना हुआ है शराब में। कहते हैं, ढाँपा क्यों है ? ढांक कर क्यों रखा है ? कहती है इसलिये कि किसी कृतघ्न की नज़र न पड़ जाये। ज़मीन से पूछा गया कि तुम्हारे ऊपर बड़े पहाड़, बड़े समुन्दर हैं, बड़ा बोझ है, बड़ा बोझ होता होगा। कहने लगी नहीं, इनका इतना बोझ नहीं जितना एक नाशुकरगुज़ार का बोझ होता है। बताओ हम लोगों की हैसियत क्या है। वह देने वाला दे रहा है, कर्मों के अनुसार, जो हमने बीजा है। शुकराना करो। और आगे के लिये अपना जीवन बनाओ। नाम के साथ लगो। नेक-पाक, सदाचारी बनो। मनुष्य जीवन में ही यह काम कर सकते हो, और किसी में नहीं। नहीं तो तत्वों के नाश होने से वैसी जूनी में चले जाओगे। और क्या है।

मिल साध संगे भज निसंगे कुल समूहा तारिये।

कहते हैं क्या करो ? साधु के संग लगो। उसके साथ क्या करो ? निसंगे ! जो वह कहे निसंग, बगैर शक शकूक के करने लगो। वह क्या कहता है ? प्रभु के साथ जुड़ो। वह आप प्रभु से जुड़ा है। तुमको प्रभु से जोड़ता है। तो कहते हैं नाम के साथ लगो नेक-पाक सदाचारी बनो, जैसी सोहबत वैसा रंग। उसी सोहबत में क्या मिलेगा ? उसके अन्तर प्रभु का प्रेम उछालें मार रहा है। सबका भला उभर-उभर कर बह रहा है। तो उसकी सोहबत में वैसा ही रंग मिलेगा। उसके अन्तर प्रभु का रंग है, नशा है जैसी सोहबत वैसा रंग। बस।

महा पवित्र साध का संग। जिस भेटत लोगे हरि रंग ॥

साधु की संगत महापवित्रता के देने वाली है। जिसके साथ भेंट करने से, दिल दिल को राह के बनने से क्या मिलेगा ? हरि का नशा आ जायेगा। सोहबत से। यह किताबों से नहीं। Life से Life आयेगी। तो इसलिये सत्संग की महिमा बड़ी गाई है। सत्संग किसको कहते हैं ?

पूरे गुरू ते सत्संग उपजे।

पूरे अनुभवी पुरूष की सोहबत से सत् संगत का फल मिलता है।

जैं सत्गुरू तैं सत् संगत बनाई।

जहां कोई सत्स्वरूप हस्ती है, उसकी संगत का नाम सत्संग है। बस। सत्गुरू किसको कहते हैं ?

सत् पुरूष जिन जानिया सत्गुर तिसका नाँओ।
तिस के संग सिख उधरे नानक हर गुण गाओ।

उसकी सोहबत में सिख का उद्धार है। जिस ने सत्पुरूष, सत् नाम को जान लिया, उसका नाम है सत्गुरू। उसकी सोहबत में सिख का उद्धार हो सकता है। कैसे ?

सत्गुर मिले ताँ अखी वेखे !

उसके मिलने से आँखें खुल जाती है, देखने वाला बन जाता है। जब देखने वाला बन गया —

जब देखां तो गावां, तो गावे का फल पावाँ।

देखकर गाने वाला बन जाये। जन्म सफल हो जाये। तो जैसी सोहबत, वैसा रंग मिलेगा। कुदरती बात है।

सिद्ध, साधक, देव मुनिजन भक्ताँ नाम अधारा।

कि जितने सिद्ध, साधक, भक्तजन हैं, सब को नाम ही का आधार रहा। नाम से ही उनकी मुक्ति है। इसलिये —

बिनवंत नानक सदा भजिये प्रभु एक करनहारा।

तो कहते हैं इसलिये हमें उसी एक को भजने वाला बनना चाहिये। जब सब सिद्ध, साधक, भक्तों का उसी नाम का आधार बना, हमारा भी बने। बस। उसी से कल्याण है।

जिन्नी नाम धियाया गये मुसक्कत घाल।

कहते हैं इसलिये हमें यह करना चाहिये। मनुष्य जीवन से फायदा उठाना चाहिये। आगे और मज़मून को खोलते हैं।

खोट न कीजई प्रभु परखणहारा।

कहते हैं वह प्रभु तो परख, कसोटी लगाकर देखने वाला है। खोट जब तक रहेगा, तुम Expert (माहिर) नहीं बनोगे। बात तो यह है। वह ऐसा सराफ़ है, वह फौरन देखने से परख लेगा। मुआफ करना वह तो परखता ही है। जिनके अन्तर वह प्रगट हो जाता है, वह परख लेते हैं। आंखों से देखने से परख लेते हैं। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) फर्माया करते थे, कि एक शीशे की बोतल है। उसमें मुरब्बा है या अचार है, देखने वाला यह देख लेता है, कि इसमें क्या है। ऐसे ही अनुभवी पुरूष, जिनको योग दृष्टि है, वह देखते हैं इसमें क्या है। मगर वह परदापोश है। आलायशों से भरा हुआ देखकर उसको धोने की करता है, मारने

की नहीं करता। माता हो। बच्चा गन्दगी से भरा पड़ा हो, तो वह क्या करती है ? प्यार से धोती है। फिर छाती से लगाती है। यह उसका काम है।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, ''खोट न कीजई प्रभु परखणहारा।'' भाई खरे ही वहां जायेंगे उसकी दरगाह में, खोटे नहीं जायेंगे। खोट किस चीज की है ? मन-इन्द्रियों के भोगों-रसों की। बस।

कूड़ कपट कमांवदड़े जन्मै सन्सारा।

कहते हैं दुनिया में कूड़, फना का ही झगड़ा चल रहा है। कूड़ की तारीफ गुरू नानक साहब ने फर्माई है।

कूड़ राजा कूड़ प्रजा।

कूड़ कहते हैं, फना चीजों को, जो हमेशा एक रस न रहे। बड़ी लम्बी चौड़ी तारीफ देकर आखिर क्या फर्माते हैं —

कूड़ कड़े नेह लगा बिसरिया करतार। किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चलणहार॥

हम फना चीजों में लग गये। फना चीजों ही के बनाने में लग गये। और कमाई कैसे की ? कपट रखकर। दिल में कुछ और, बाहर कुछ और। साफगोई से तो आप किसी का रूपया हर नहीं सकते।

पापा बाझों होय न कठी ते मोयां नाल न जाय।

बस ! इस दुनियां से आगे दुनियां में जाना है भई। सबने जाना है। सबका मुकलावा एक दिन हो जाना है। कौन सी चीज़ जायेगी ? यह शरीर साथ आता है, यह भी नहीं जायेगा। बाकी के सामान कैसे जायेंगे ? लाखों के हों, तो लाखों यहीं रहेंगे। अगर हज़ारों के हों तो हज़ारों रहेंगे। सैंकड़ों के होंगे तो सैंकड़ों रहेंगे। कुछ नहीं, कुछ भी नहीं होगा तो भी जिसम साथ नहीं रहेगा। फिर किसके लिये हम इतना अपना सत्यानाश करते हैं ? साथ तो एक चीज़ ने भी नहीं जाना है। आगे कैसी दुनियां है उसका हमें पता ही नहीं। महापुरूष कहते हैं, तुम्हारे अन्तर वह दुनियां है। चलो। आप जाते हैं, तुमको साथ ले चलते हैं।

गुरूमुख आवे जाये निसंग।

आने-जाने वाले बन जाओगे। महापुरूषों की और आम लोगों की, आलिमों और फाजिलों की (विद्वानों की) तालीम में यही फर्क है, कि वह कहते हैं कि जिन्दगी के आगे एक और जिन्दगी है जिसमें तुम अब भी जा सकते हो। इससे बड़ी भारी खूबसूरत जिन्दगी तुम्हारे अन्दर में है। आगे भी है। एक दूसरे से, इससे सूक्षम ज्यादा खूबसूरत है, सूक्षम से कारण दुनियाँ ज्यादा खूबसूरत है। और उससे परे और निर्मल चेतन देश, आनन्दमय है। मगर हमें पता नहीं।

तुलसी साहब फर्माते हैं, कि जब मैं ब्रह्मण्ड में पहुंचा, यह पिण्ड है, इसके अन्तर अण्ड है, आगे ब्रह्माण्ड है, वहां पहुंचा, स्थूल, सूक्षम ग़िलाफ़ उतार कर, तो वहां देखा वाह ! वाह ! बड़ा आला देश है। All Glory and beauty lies within you. तुम्हारे अन्तर बड़े भारी आनंद के सोमें (स्त्रोत) हैं। कहते हैं, जब मैं पारब्रह्मण्ड में पहुंचा, यह मालूम हुआ कि ब्रह्मण्ड एक मेहतरों की टट्टी है। हम भूल में जा रहे हैं। महापुरूष कहते हैं अब भी तुम जा सकते हो। बस। यह फर्क है। जिसको इस जिन्दगी में रहकर पिण्ड से ऊपर जाना नसीब हो गया उन मण्डलों में सफर करने लग गया, उसको मौत का क्या खौफ है, खुशी-खुशी जायेगा।

जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द। मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द ॥

मगर अफसोस हमें उस दुनियां का पता ही नहीं, कोई इशारा भी नहीं देता। यह एक अनुभवी पुरूष की कहानी है, जिसके मिलने से यह राज़ (भेद) सब हल होते हैं, ज़िन्दगी मिलती है। आलिम (विद्वान) आपको इल्म दे सकेगा, ग्रन्थाकार तुमको ग्रंथों की बातें सुना सकेगा। अरे भई वह (अनुभवी पुरूष) देखते हैं, दिखा सकते हैं। इसलिये अनुभवी पुरूष का साथ और एक आलिम पण्डित के साथ में बड़ा भारी फरक है। कबीर साहब मिले हैं जब सरबाजीत पण्डित से, तो कहा —

तेरा मेरा मनुवां कैसे इक होई रे।

कि ऐ पण्डित, ऐ आलम, ऐ फाज़ल, तेरा और मेरा मन कैसे मुत्तफिक (सहमत) हो सकता है।

मैं कहता हूं आँखन देखी, तू कहता कागत की लेखी।

तू पढ़ा-पढ़ाया बयान करता है। अरे भई देखा बयान ज्यादा होगा कि नहीं ? और कौन देखता है ?

सो गुरूमुख देखे नैनी।

जो गुरूमुख बने। गुरूमु किसको कहते हैं ?

जो गुरू सेती सन्मुख हो।

गुरू अमरदास जी साहब की तालीम है। जिसको ऐसा अनुभवी पुरूष ही नहीं मिला वह गुरूमुख कहां है मुआफ़ करना ! गुरूमुख कोई मामूली ताकत नहीं, बड़ी भारी ताकत है।

गुरूमुख कोट उद्धारदा दे नांवें एक कणी।

थोड़ी सी कणी, पूंजी, देकर करोड़ों जीवों का उद्धार करता है। गुरूमुख बड़ी भारी हस्ती है।

गुरू सिख, सिख गुरू है एको गुरू उपदेष चलाय।

पहले पूर्ण सिख बनता है, गुरूमुख बनता है, फिर गुरू बना। वही Commission का

काम चल पड़ता है, यह उस मालिक की दात है। इन्सानी Selection नहीं कि President या Minister चुन लोगे। अरे भई यह प्रभु की दात है। जिसको वह चुन ले वही प्रभु के साथ जोड़ सकता है। जिसके अन्तर वह आप बैठा किसी को जोड़े, यह कह दो। बड़ी साफ़गोई है।

गुरू में आप समोये सबद बरताया।

गुरू के अन्तर — वह हमारी ही तरह इन्सान है — वह (प्रभु) आप उसके अन्तर प्रगट हो जाता है, और लोगों को प्रभु के साथ जोड़ता है।

संसार सागर तिनी तरिया जिनी इक धियाया।

जिन्होंने उस एक को धियाया है, वह संसार सागर से तर गये। एक किसको कहते हैं ? जहां भी गुरूबाणी में आता है, 'एको ऊंकार' एके का पहले निशान दिया है, मगर आपको पता है वह एक है ? ठण्डे दिल से विचारिये। एक इसलिये मिला है, समझने के लिये, मगर जिसको वह एक बोध करा रहा है ना, वह कुछ और है। कबीर साहब ने कहा —

एक कहूं तो है नहीं दो कहूं तो गार। जैसा है तैसा रहे कहें कबीर बिचार॥

वह अपने आपमें कुछ है, जिसको लफ्ज़ एक से, Numeral One से हम बयान करते हैं। अब सवाल आता है, कि एक का सवाल हुआ ना, गुरूबाणी कहती है, हम क्यों एक से बयान करते हैं ? एक किसको Denote (बोध) करता है ?

इस एके का जाणें भेव, सोई करता सोई देव।

जिसको हमने एक करके बयान किया है, उसके राज़ (भेद) को, जो जान लेता है, वह प्रभु को जान लेता है, एक हो जाता है। फिर एक क्यों बयान किया तुमने भई ? तो फर्माते हैं।

तू बेअन्त हौं मित कर बरनूं। क्या जानां होय कसी रे॥

तू बेअन्त है, हम Finite हैं, हद में हैं। हम अपनी Finite Terms (सीमित परिभाषा) से तुझे बयान करते हैं कि हे प्रभु तू एक है। न तू एक है, न दो है, तू कुछ और है, जिसको यह एका (1 का आँकड़ा) बयान कर रहा है। उस एके को कैसे दृढ़ कर सकते हो ? बाणी में आता है।

सत्गुरू दृढ़ाये एक एका।

जब सत्स्वरूप हस्ती मिलेगी, जिसको हम एक करके बयान करते हैं, वह (सत्गुरू) उसका अनुभव करायेगा। बाणी कितनी साफ है। सारे महापुरूष एक ही बात कहते हैं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। क्या कहते हैं, ''संसार सागर तिनी तरिया जिनी एक धियाया।'' एक के धियाने का मतलब समझ आया आपको ? हम सब उसी के पुजारी हैं। वह लाबयान (अवर्णनीय) है।

सदियों फिलासफ़ी की चुनाओ चुनी रही। मगर खुदा की बात जहाँ थी वहीं रही ॥

यह सब खण्ड ब्रह्मण्ड चल रहे हैं। उससे। कई तरीकों से दुनियां उसको याद कर रही है। उसको एक करके बयान करती है। एक भी मिलने के लिये है, Finite Terms (सीमित परिभाषा) से समझने के लिये यह Term बरती है। मगर वह तो बेअन्त है, उसको एक करके बयान करते हैं। उसी से यह सब कुछ बना है। अगर उसका अनुभव करता है —

इस एके का जाणें भेव, सोई करता सोई देव।

मगर कैसे इसका अनुभव होगा ?

सत्गुरू दृढ़ाये एको नाम।

जो सत का स्वरूप हो गया उसके पास बैठने से तुम भी उसका अनुभव करने लग जाओगे जिसका उसने किया है। यह है राज़ (भेद) की बात। बाणियों में बयान है, मगर हमको खोलकर देखने की जरूरत है।

पियो दादे का खोल डिठा ख़ज़ाना। तौ मेरे मन भया निधाना ॥

यह बाप दादे के ख़ज़ाने हैं जिनको खोलकर देखने कि जरूरत है।

उमलोक लाल एह बचन।

हीरे और जवाहरात से ज्यादा कीमती हैं। हम सिर्फ पढ़ छोड़ते हैं। भई अदब करो जितना कर सको। पढ़ो। समझो। समझकर अमल करो। तुम्हारी कल्याण हो जाये।

तज काम क्रोध अहंकार निंदा, प्रभु सरणाई आया।

अब उस एक को धियाने के लिये क्या चाहिये ? आगे आप ही बयान करते हैं। बड़ा Systematic way में (कायदे से) बयान करते हैं। क्या करो ? कहते हैं —

तज काम क्रोध अहंकार निंदा, प्रभु सरणाई आया।

उसकी शरण आ सकोगे जब तुम काम, क्रोध, निंदा को छोड़ेगे। काम कहते हैं —

जेती मन की कल्पना काम कहावे सो।

कामना विहीन हो जाओ, ख़्वाहिशात से परे हो जाओ। कामना हो तो ख़्वाहिश बने। ख़्वाहिश बने तो उसको पाने का यत्न हो। इसका नाम काम है। और ब्रह्मचर्य की रक्षा हो। जिस मकान की बुनियाद ही मज़बूत नहीं तो मकान कहां बनेगा ? नेक-पाक ख्याल, सदाचारी जीवन, ''जत पहारा'', जत का पहारा दुकान में हो तभी आगे सोना बनेगा ना। फिर ! सुनयार भी हो, Patience (धैर्य) हो, तब काम बनेगा, ऐसे कैसे बनेगा। जल्दबाजी

का काम नहीं। जत की दुकान में बैठ कर, उसमें धीरज को सुनयारा बनाओ। मति को एहरन बनाओ, अनुभव जो मिला है, अन्तर में Contact (परिचय) उसके अनुभव पर, उसको रोज़ अनुभव करो। और आगे क्या कहते हैं, कि उसके भय की धौंकनी बनाओ। हवा दो। तो ऐसी कुठाली में प्रभु का नाम घड़ा जायेगा।

जत पहारा धीरज सुनयार, ऐहरन मत वेद हथियार। भौ खला अगन तप ताप।

आगे कहते हैं अमृत नाम का जिकर करके फिर कहते हैं उसमें सबद उस टकसाल में घड़ा जायेगा। यह जीवन तुमको मिल जायेगा। तो सब महापुरूषों ने यही बयान किया है। कहते हैं काम को, काम में रूह गिरती है, क्रोध में फैलती है। निंद पराई, तात पराई। अनिंद बन जाओ। किसी की तात पराई न रहे। अगर यह हालत बन जाये, फिर तुम उस एके को धिया सकोगे। नहीं तो नहीं।

जल थल महियल रविया स्वामी, ऊच अगम अपारा

कि वह मालिक स्वामी कुल मालिक —

उच्च अपार बेअन्त स्वामी। सबकी आद कहूं अब स्वामी। कोट ब्रह्मण्ड को ठाकुर स्वामी।

कहते हैं, वह कैसा है ? जलों, थलों में वह भरपूर हो रहा है। समझे ! उसका क्या काम है ? वह अगम है, अपार है। उसको क्या करना चाहिये ? आगे बयान करते हैं —

बिनवन्त नानक टेक जन की चरण कमल अधारा।

जो उसके दास बने, उसके जीवन का आधार है। वह टेक है। परिपूर्ण, हर वक्त हाज़र-नाज़र हम उसमें रह रहे हैं। वह हममें रह रहा है।

मैं अन्धले की टेक तेरा नाम खुन्दकारा।

हमारा जीवन आधार है। वह कब मिलेगा ? है तुममें, जब आप काम, क्रोध, त्यागोगे, अनिंद बनोगे। बस।

दिल का हुजरा साफ़ कर जानाँ के आने के लिये।
ध्यान ग़ैरों का उठा उसके बिठाने के लिये॥

यही तरीका है उसके आने का। फिर कहते हैं, क्यों नहीं साफ़ हमारे हृदय के ख्याल ? क्यों हम साफ़ नहीं हो सकते ? आगे कहते हैं।

एक दिल लाखों तमन्ना उस पे और ज्यादा हवस।
फिर ठिकाना है कहां उसके बिठाने के लिये॥

एक दिल, लाखों ख्वाहिशात, और दिनों दिन बढ़ती हुई हवस, अरे भई ऐसे हृदय में प्रभु कहां आये ? उसके सिवाय और कोई ख्याल न रहे। सब ख्यालों को नफ्री कर दो। वह वहां आगे ही मौजूद है, नज़र आने लग जायेगा। तुमने पैदा नहीं करना। वह आगे ही मौजूद है। It is already there. सिर्फ ऐसी जमीन बनाओ। पानी जब खड़ा हो जायेगा। उसमें झलक आने लगेगी।

पेख हर चिन्दौरी थिर किछ नाँहि। माया रंग जेते से संग ना जाही ॥

चिन्दौरी कहते हैं, कई दफ़ा आप देखेंगे बादलों में कई शहर बन जाते हैं, कई घोड़े बन जाते हैं, कई आदमी बन जाते हैं। कहते हैं, कि उसकी कोई हकीकत होती है ? नहीं। कहते हैं, इस दुनियां के रंग बदल रहे हैं। यह सपने की तरह है। एक बना, आज आया, कल गया। बदल रहे हैं। कहते हैं इसको पेख-पेख कर क्या होता है कि इन्सान भूल में रहता हुआ इसी ढंग में रहते हुए, भूल में जाता है। जाते हुए साथ कोई चीज नहीं जाती। जैसे हवा चलती है, कई बादल, मकान, यह वह बनते हैं। फिर कोई नहीं रहता। ऐसे ही दुनियां में इन्सान भूल में जा रहा है। वह समझता है जिसम हमेशा साथ है। यह भी साथ नहीं जाता। यह समझता है यह सामान सारे दुनियां के साथ जायेंगे। एक भी साथ नहीं जाता। इसके कमाने का, ढेरों के ढेर लगा-लगाकर यहीं का यहीं छोड़ जाता है। मर जाता है। मरने पर भी Death Duty लग गई, आपको मालूम हो। और ज्यादा न कमा कर छोड़ जाये। वह भी आगे बांट दिया जायेगा। बताओ क्या हशर है जिन्दगी का ! तो इन्सान भूल में, माया कहते हैं भूल को। यह भूल कहां से शुरू होती है ?

एह सरीर मूल है माया।

इस शरीर से। तुम आत्मा देह-धारी हो। देह का रूप बन गये। जिसम के Level से देख रहे हैं। यही भूल है। बाकी सारा Angle of Vision (दृष्टिकोण) बदल जाता है। जगत स्थिर नहीं है। अनित है। मगर हमें नित भास रहा है। बड़ी भारी भूल है। पढ़े लिखे, अमीर-गरीब, सब इसी मूल में जा रहे हैं। Right Understanding न रही। तो कहते हैं, इसका हशर क्या होता है।

माया रंग जेंते से संग ना जाहीं। पापां बाझों होय न कठी ते मायां नाल न जाय।

बस ! यह हालत बन रही है।

हर संग-साथी सदा तेरे दिनस रैन समालिये।

हरि तेरा संगी और साथी था। वह जीवन आधार है। मरकर भी तुम्हारा जीवन आधार है। उसकी परवाह नहीं करते। उधर मुंह ही नहीं करते। वह सच्ची दौलत जो थी, सच्चा सौदा था, वह तुम इकट्ठा नहीं करते।

सच्चा सौदा हरि नाम है।

हम झूठे सौदे लगा बैठे हैं। महापुरूष आते हैं, दुकान लगाते हैं। आओ भई किसी ने पार जाना हो। यह सच्चा सौदा नाम का मिल रहा है। करो। जिसने लेना है, ले लो। मगर अधिकार के मुताबिक लोग ले सकते हैं। सोना बिक रहा है। बिना अधिकार नहीं , कोई नहीं लेता। लोहार की दुकान पर, छाबड़ी फरोश की दुकान पर, बहुत सारे बच्चे हला-हला करते तुम्हें मालूम होंगे। हीरे जवाहारात की दुकान पर कोई कोई जाता है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं बात को। समझने की गरज है।

हर संग साथी सदा तेरे दिनस रैन समालिये।

कहते हैं चौबीस घन्टे उसकी याद करो। वह तुम्हारा सच्चा संगी और साथी है। जीते भी साथ, मरकर भी साथ। समझे ! यह तुम्हारा जीवन आधार कहो, यह तोषा है।

तोषा बांधो जिया का एथे ओथे नाल। सन्त जनाँ मिल भाइयो सच्चा नाम सम्भाल ॥

यह सच्चा नाम है। इसको भई पल्ले बान्धो। यह तोषा है, जो दुनियां में भी और मरकर भी तुम्हारे साथ रहेगा।

मीत जोबन माल सरबस प्रभु एक कर मन माँहि।

कहते हैं, ऐ मित्र यह जोबन, यह माल, यह बाहर के जितने सामान हैं, सब उसी के समझो। वही एक चीज तुम्हारे साथ है, बाकी यहां का जोबन, जवानी, माल, धन यहां का यहीं, उसी की दौलत है। दातार को पकड़ो, दातों में क्यों उलझ रहे हो। इनको बरतो, उसका समझकर। बन्धन में नहीं होवोगे। अगर अपना समझकर बरतोगे तो यह अमानत है तुम्हारे लिये, प्रभु ने तुम्हें दी हैं। इसको नेक तरीके से बरतो, उसी एक का जानकर। उसी एक की तरफ तवज्जो जाये। हमेशा जैसे कम्पास की सुई हमेशा नार्थ, उत्तर को जाती है। दातों को देखकर दातार को याद करो। बस ! उसका शुकराना करो। फिर कोई बन्धन नहीं रहेगा। जहां पर अपनापन आ जाता है ना बीच में, वही बन्धन का कारण है।

जब एह जाने मैं किछ करता।

अब आगे फरमाते हैं।

बिनवन्त नानक बड़भागी पाइये सुख सहज समाई।

तो फर्माते हैं, ''प्रभु एक कर मन माहिं।'' एक ही प्रभु को मन में बसा लो। उसका नतीज़ा, क्या होगा ? कहते हैं, बड़े भागों से यह दौलत मिलती है। तुम सहज के सुख में समा जाते हो। यह तृगुणातीत अवस्था को पा जाता है। सहज किस को कहते हैं ?

तीन गुणों में सहज न उपजे मनमुख भरम भुलायन।
चौथे पद में सहज है गुरमुख पल्ले पायन ॥

गुरमुख को मिलती है। ''जो गुरू सेती सन्मुख हो।'' वह कैसे मिलती है ? कहते हैं नाम के धियाने से। नाम तुम्हारे अन्तर में। वह हर वक्त हाज़र-नाज़र है, वह जो संगी है साथी है, उसकी तरफ हम तवज्जो नहीं देते। जो यहां की चीज़ रहने वाली है उसी में हम लम्पट हो रहे हैं। अगर हमारे अन्तर उस एक प्रभु का प्यार बस जाये, वह जीवन साथी मरकर भी साथी रहेगा। यहां की चीजें कुछ भी हैं, यहीं की यहीं रह जायेंगी। न किसी के साथ गई न जा सकेंगी। तो किसी समाज में रहो भई, तुम इन्सान हो। अपनी आत्मा को जो पाक और पवित्र है, उसको आलायशों (विकारों) से बचाओ। वह मन-इन्द्रियों के भोग हैं। जो प्रभु से जुड़े हैं, उनसे वह थोड़ी पून्जी ले लो। उससे Capital ले लो। उसके साथ जुड़ो दिनों दिन बढ़ाओ, इतना कि सब कुछ उसी का हो जाये। उसी के नाम पर सब कुर्बान हो। समझे ! यह अमानत है, चीजें, बाल बच्चे, रूपया-पैसा, जायदादें यह अमानत हैं तुम्हारे पास, चन्द-रोज। ठीक तरह से इस्तेमाल करो। प्रभु की तरफ ले जाने में यह चीजें मददगार बनें। उल्टी हमारी रूकावट बन रही हैं। तो यह है महापुरूषों का कलाम। वह हमेशा कहते हैं, अरे भाईयों, हमारा एक कहना मान लो। तुम बुरी तरह से दुनियां में उलझ रहे हो। जिससे जुड़ना है, वह तुम्हारा जीवन आधार है। सिर्फ अन्तरमुख होने का सवाल है। तुम्हारे अन्तर सुखों का समुन्दर ठाठें मार रहा है। जहां वह चीज़ है, वहां तुम उसको तलाश नहीं करते, बाहर दुनियां में करते हो, भटक भटक कर मर जाते हो। वह अदृष्ट और अगोचर होकर मिलेगी। अर्न्तमुख हो। किसी अन्तर जाने वाले महात्मा की सोहबत करो। तुमको वह उसका रस्ता दे देगा। तजरूबा करा देगा। थोड़ी सी पून्जी दे देगा। उनकी हिदायत के मुताबिक कमाई करो। तुम भी उसी गति को पा जाओगे जिसको उसने पाया है।

मैं अमेरिका में गया। वहां बच्चे थे कोई छह सात साल के। मैंने पूछा, What do you want ? तुम क्या चाहते हो ? तो कहने लगे, We want to become Master. हम गुरू बनना चाहते हैं। मैंने कहा, भई नेक-पाक बनो, सदाचारी बनो, नाम को जपो, You may be selected as a Master. तुम भी चुने जा सकते हो। Ambition (इच्छा) तो है ना ! हम तो यह रखेंगे, हम मैम्बर ऑफ पार्लिमैन्ट बनेंगे, हम कमिश्नर बनेंगे, हम यह बनेंगे। यह Ambition होती है बच्चों को, हम थानेदार बनेंगें, प्रोफेसर बनेंगे। अरे भई कभी यह भी ख्याल आया हम मालिक के बच्चे बनेंगे ? ऊँचा ख्याल है ना ! बात तो यही है। आख़र जाना है भई। कौन रहा और कौन रह सकता है। (इसके बाद महात्मा तुलसी दास जी का प्रवचन हुआ।)

महात्मा तुलसीदास का वक्तव्य

हमें बहुत समय हो गया सत्संग को सुनते हुए। महापुरूषों ने अपना जो गुप्त रहस्य था,

वह आप लोगों के सामने पेश किया और उसके सब तरीके बतलाये। लेकिन हम यह देखतें हैं कि महापुरूष अपनी पूंजी जो थोड़ी सी आप को दे देते हैं, तो इसमें वृद्धि क्यों नहीं होती? इसमें उन्नति हम लोग क्यों नहीं कर पाते ? उसके यह कारण हैं व्यवहारिक, जो अपने इस शरीर के सम्बन्ध रखते हैं। जब तक हम शरीर सम्बन्धी व्यवहारों को ठीक नहीं करेंगे तब तक महापुरूष की पूंजी की वृद्धि हम लोग नहीं कर सकते हैं। और वह हमारी बहन व भाई जिन के सामने हम स्पष्ट कहना चाहते हैं , इस पर गौर करेंगे। जो लोग सत्संग में शरीक हुये हैं, पहलने तो उनको इस बात का प्रण कर लेना चाहिये कि आज से हम कभी सिनेमा नहीं देखेंगे। हमारी बहने तथा भाई जो लोग सिनेमा देखते हैं, वह सिनेमा की तस्वीरों से अपने आपसे व्यापार करते हैं। यदि उन तस्वीरों से हमने व्यापार कर लिया तो महापुरूष की तस्वीर जो है, वह हमारे अन्त:करण में नहीं आयेगी। और हम उसको याद नहीं कर सकेंगे। तो जिस दिन से सत्संग में नहीं आये तब से पहले भले ही आप सिनेमा देखें, आपके बच्चे देखें। लेकिन सत्संग में आकर हमें सिनेमा नहीं देखना चाहिये। जो लोग सिनेमा देखते हैं, वह यह समझें कि हम महापुरूषों के उपदेश और उनके नियमों पर नहीं चलते। जो महापुरूषों ने हमें नियम और उपदेश दिया है उस पर चलना हमारा धर्म और कर्तव्य है।

दूसरी बात और एक यह है, वह बड़ी जबर्दस्त है। हम सत्संग में अधिकांश लोगों को यह देखा करते हैं कि लोग सत्संग में सोया करते हैं। इसका कारण सोने का क्या है ? महापुरूषों के सामने आकर दोनों आंखों को खोलना चाहिये और जब तक वह सत्संग करता रहे तब तक बराबर अपनी दृष्टि को उनकी दृष्टि के सामने टिकाये रहें। जो अपनी दृष्टि को उनकी दृष्टि के सामने नहीं टिकाये रहेंगे तो आपको उसकी दया नहीं आ सकती आपके अन्दर में। उसकी दया का फ़ायदा नहीं उठा सकते हैं। हम लोग आ जाते हैं, आंखों को बन्द कर लेते हैं और उसके बाद हम सोते रहते हैं तो बड़े अफसोस की बात है। उसका कारण क्या है ? वह यह है कि हमारे अन्तर ब्रह्मचर्य का पालन नहीं है। तो यदि हम महापुरूषों की दया का फायदा उठाना चाहते हैं तो ब्रह्मचर्य का पालन करना निहायत जरूरी है। कम से कम हमें दो महीने के ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। अगर आप को दो महीने का ब्रह्मचर्य होगा तो आप महापुरूष की दी हुई पूंजी को बढ़ा सकते हो। अगर महापुरूष की दी हुई पूंजी नहीं बढ़ाई तो तुमको कलंक लगेगा। महापुरूष को कलंक कभी नहीं लगता क्योंकि उसका जीवन बड़ा ऊँचा, सुच्चा और महापवित्र है। तो दो महीने का ब्रह्मचर्य गृहस्थ जीवन में करना चाहिये। लोगों की मेरे पास में चिट्ठियां आती रहती हैं कि हम बीमार हैं, हमारे बाल बच्चे बीमार हैं, इसका इलाज बताइये। मैं उनको लिखता हूं कि मेरे पास इसका क्या इलाज है। मैं उनको लिखता हूं कि यह वह इलाज है जिसको आप बिना पैसे अपना सकते हैं। लोगों ने कहा हम जरूर अपनायेंगे। तो मैंने लोगों को यह कहा कि दो महीने तक आपको ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ेगा। लोगों ने कहा महाराज यह तो नहीं हो सकता। यह तो बड़ा मुश्किल है। अगर

यह भी मुश्किल है तो जो नाला बह रहा है उसी में बहे जाओ।

मैं जगह जगह जाता हूं, बैठकर सुनता हूं, मगर यह बरखा कहीं नज़र आती जो यहां पर हो रही है। मगर अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि हम इस बरखा से फ़ायदा नहीं उठा रहे हैं। अगर उठा रहे हैं तो बहुत कम। जबकि महाराज जी ने सदाचारी जीवन के ऊपर कितने मरतबे कहा होगा, लेकिन इसके ऊपर हमारा ध्यान नहीं गया। तो आप लोग दो महीने का ब्रह्मचर्य रखिये। फिर देखिये आपका मन कैसे नहीं लगता है। आप कैसे दो चार घन्टे भजन सुमिरन नहीं कर सकते हैं। लेकिन अफसोस की बात है कि हम महापुरूषों की शिक्षा को धारण नहीं कर पाते हैं।

महाराज जी का सत्संग

महात्मा तुलसी दासजी ने आपके सामने चार चीजें रखी हैं, और वाकई काबिले ग़ौर हैं। पहली बात तो यह कही है, याद रखो जैसी सोहबत होगी वैसा ही रंग आयेगा। सिनेमा की बीमारी बहुत बढ़ रही है। बच्चे भी जाते हैं, स्त्री भी जाती है, पति भी जाता है। सब नाच रहे हैं एक रंग में, अदब कायदा कहां रहेगा ? सदाचार कहां बनेगा ? जितने सिनेमा में शो दिखलाये जाते हैं, अगर कोई Pure धार्मिक आ जाये तो वह तीन दिन भी नहीं चलता। एशो इशरत के, जिसमें काम के कलोल हों और धोखा, फरेब, चालाकी, वगैरह के नमूने पेश किये जाते हैं, वह कई कई हफ्ते चल पड़ते हैं। तो वहां जाने से ख़्यालत की परागन्दगी होती है। जैसी सोहबत वैसा रंग। वही संस्कार जो देखे हैं, वह हमारे हृदय में बस जाते हैं। वह निकलने नहीं। तो यह बात जो कही है, बड़ी अच्छी काम आने वाली बात है। भाई बचो इससे। बहुत अच्छा ख्याल है। तुम्हारे भले के लिये है।

दूसरी बात जो कही कि सत्संग में आना मैंने पहले भी अर्ज किया था, सत्संग में आने का फायदा क्या है अगर वहां आप सो जायें। आये हो, यह समझो तुम बैठे हो या वह बैठा है, वक्ता जो है, और कोई नहीं। अगर आप जबांदनी भी नहीं समझोगे ना वह क्या कहता है, मगर नफसे मजमून को समझोगे। मैं जर्मनी में गया, बर्लिन में। आगे भी कई बार जिकर किया है। वहां उनकी जबान से मैं नावाकिफ था। अंग्रेजी में मैं बोलता था। एक Interpretor (दुभाषिया) रखा था जो ज़र्मन ज़बान में उनको तरजुमा करके बतलाता था। दस पन्द्रह मिनट के बाद कहने लगे वह लोग Interpretor से कि भाई तुम गलत कर रहे हो, हम इनकी आंखों से ठीक समझ रहे हैं। अगर आंख आंख को पहचाने, यक्सूई हो, तो अन्तर भाव दिल में असर करते हैं। समझे ! नहीं तो सत्संग में आकर सोना, बड़ा भारी नुकसान है। घर से भी वक्त निकाला और यहां भी सो गये। अब सवाल यह आता है कि नींद आती क्यों है ? बड़ी अच्छी चीजें पेश की हैं। नींद आती क्यों है ? आलस क्यों आता है ? कारण यह है कि हमारी ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं। ब्रह्मचर्य की रक्षा जिन्दगी है। कई बार आपके सामने पेश किया गया है।

इसका पात करना मौत के बराबर है। आपने आपके सामने दो महीने के प्रण को कहा है। समझे ! भई कुदरत के नियम के मुताबिक जीवन को बनाओ। हैवानों में देखो। उनका भी नियम है। खास मौसम में उनका गर्भ ठहरता है। यहां दिन-रात यही काम है। कोई समय नहीं है। एक बार अगर किसी का टिक जाय गर्भ, हैवानों में, तो दूसरे के नजदीक नहीं जाते। हम कुत्तों से भी बदत्तर हैं। ठंडे दिल से बिचारो। बातें पल्ले बान्धने वाली हैं। तो उन्होंने कहा कि दो महीने का ब्रह्मचर्य रखो, तुम्हें कुछ होश आने लगेगी। Tonic से जीवन नहीं बनता याद रखो। जितने Tonic हैं, यह और उभार देते हैं विषय को। हजार खुराक खाओ वह ताकत नहीं आती। अगर एक ब्रह्मचर्य की रक्षा रख लो, कोई Tonic की जरूरत नहीं। समझे ! और ब्रह्मचर्य की रक्षा के बारे में यह कहा है, गुरू नानक साहब फर्माते हैं —

जिन बिन्द खोई तिन सब किछ खोया।

झगड़ा पाक ! जिस मकान की बुनियाद ही नहीं, मकान क्या करेगा ?

तो गृहस्थ आश्रम में जीवन बनाओ अपना शास्त्र मर्यादा के मुताबिक। यह मज़मून कई दफ़ा आपके सामने रखा गया है, मगर क्योंकि हम पालन नहीं करते, खाली सुना एक कान से, दूसरे से निकल गया।

वही है चाल बेढंगी जो आगे थी सो अब भी है।

सिर दर्द करता है, कभी पेट दर्द करता है, कभी दुख आ गया, मुकाबला करने की ताकत है नहीं, दवाईयों से, Action Reaction होकर और अधोगति को पहुंचता है। और बहुत सारे बीबियों और मर्दों को, ब्रह्मचर्य न होने की बीमारी है। तो इसकी रक्षा ज़िन्दगी है। महात्मा गांधी जी ने कहा कि मुझे जब ब्रह्मचर्य की रक्षा की होश आई, मैंने इसे सम्भाला, मैं क्या कुछ बन गया। कहते हैं कि अगर मुझे पहले होश आ जाती तो मालूम नहीं क्या बन जाता। मेरे अर्ज़ करने का मतलब आप समझे ! 'जत पाहरा' मैंने अभी अर्ज़ किया था, पवित्रता ख्यालत की, ब्रह्मचर्य की रक्षा। यह दुकान है, जिसमें सोना घड़ा जा सकता है। और Patience (धीरज) के साथ। तो हमें जितना नींद, आलस, बैठ नहीं सकते, सिरदर्द करता है, मन भागता फिरता है, उसका मूल कारण यह है कि हममें ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं है। आपको जो डायरी दी गई है, उसमें यह खास Heading है। मगर आप अगर करें तो आप को होश आ जाये। आपका दिल दिमाग ठिकाने होने लगेगा। भजन के वक्त भजन कर सकें, किसी Tonic की जरूरत नहीं। सादा खुराक से आप को वह खुराक मिलेगी जो कहीं और नहीं मिल सकती। तो कम से कम जो इन का कहने का मतलब है, मैं तो यही कहूंगा कि शास्त्र मर्यादा के मुताकिब जीवन बनाओ। शास्त्र मर्यादा कहते हैं, जब-जब औलाद की ख्वाहिश हो। यह विषय विकारों की मशीन नहीं है। शादी करने का मतलब जीवन-साथी को साथ लेना है, जो

दुख में, सुख में इस मनुष्य जीवन की यात्रा के अन्दर हमारा साथ दे, उस प्रभु के पाने के लिये। असल मतलब तो यही है शादी का। जितने महापुरूष आये, ज्यादातर गृहस्थ आश्रम में आये हैं। मगर उनका गृहस्थ आश्रम यह नहीं, जो हमने बना रखा है।

मैंने कई बार आपसे जिकर किया है हम जब छोटे थे, हमारे बहन भाई पैदा होते थे। हम पूछते थे, यह कहां से आये ? हमें कहा जाता कि यह दाई दे गई है, दाई। हम मान लेते थे। इतना जीवन पवित्र था हमारे माता पिता का कि हम यह कहते थे ठीक है। आज छोटा बच्चा देखता है तुमको, वह नकल करता है। इतने जीवन गन्दे हैं बच्चों के जिसका हद हिसाब नहीं। उसके जिम्मेवार कौन हैं ? हम लोग हैं ! तो दूसरी बात कम-से-कम होश आने के लिए भई संयम का जीवन बनाओ और आखरी एक और चीज बयान की जो और निहायत जरूरी है, कि अनुभवी पुरूष के पास आते हो तो दो नजर चार होकर न जाओ। यह समझो और कोई नहीं है। वहां रौयें आयेंगी, उसी को देखकर प्रभु का यकीन आयेगा। ताकत कि किताबें पढ़ने से ताकत का कोई ख्याल दिल में नहीं बैठ सकता। जब पहलवान किसी को देखो, ताकत का इजहार होने लगता है ना ! ऐसे ही अनुभवी पुरूष को देखकर प्रभु का शौक बनने लगता है कि हाँ है कुछ ! किताबों के पढ़ने से शौक नहीं बनता। यह वचन आपके फायदे के लिये है भई ! इसको पल्ले बान्धो, काम बन जायेगा। मगर हम वही करते हैं जो मनमानी बातें होती हैं। नतीजा क्या है ? तरक्की नहीं होती। जो कर रहे हैं, जिनको डायरी रखाई गई है, जो डायरी रख रहे हैं, अपने जीवन की पड़ताल की, वह तरक्की कर रहे हैं। डायरी रखना ही आप लोगों के लिये मुश्किल है। और मैं इस पर हमेशा ताकीद करता हूं, मगर परवाह नहीं करते आप लोग। अगर यह रख लो तो डाकू से डाकू इन्सान महात्मा बन सकता है। जीवन की पड़ताल करो। बड़ी भारी जरूरत है इसकी।

तो यह जो चार चीजें महात्मा तुलसी दास जी ने पेश की हैं बड़ी काम आने वाली चीजें हैं। इनको धारण करो, दिनों दिन भजन बनेगा। यही चीजें आगे भी आपके सामने रखी जाती हैं। मगर अब एक और महात्मा की जबान से एक बात सुनली। मुझे जो समझ बूझ आई थी, कहा। उसकी और प्रौढ़ता हो गई ना। इसलिये कृपा करके जो सुना है, उसको जीवन में धारण करो ताकि तुम्हें होश आये। तो कुछ और भी कर सको।

गुरू गुरू जपना रे, सत्गुरू को हृदय धारना। इक सुख पाया मैंने, काम के त्याग में।
हर दम ताजा, कबहूं नाही हारना। इक सुख पाया मैंने क्रोध के त्याग में।
मन की प्रफुल्लता रे, रस्ते में कोई ख़ार ना। इक सुख पाया मैंने लोभ के त्याग में।
ऐसा धन पाया रे जिसका कोई पावे पार ना। इक सुख पया मैंने मोह के त्याग में।
सभी जग अपना रे ममता से कोई कार ना। इक सुख पाया मैंने मान के त्याग में।

रंक शहिन्शाह रे जिसे कोई अहंकार ना। सभी सुख पाये मैंने सावन के राज में। सावन सावन जपना रे सावन सावन गावना। गुरू गुरू जपना रे सत्गुरू को हृदय धारना।

यह पांचों डाकू दुनियां को लूट रहे हैं। इनके बस आने का एक ही इलाज है।

साध के संग आवे बस पन्चा।

यहां, आप लोगों की खुशकिस्मती है, कई महात्मा आकर आपको दर्शन देते हैं। मेरे दिल में उन सबकी इज्जत और कदर है। मैं समझता हूं प्रभु के पाने के लिये हम सब मज़दूर हैं लगे हुए, ज़मीन को खोद रहे हैं। जो काम उसने लेना है वह ले रहे हैं। उनका शुकराना है कि आप भाई दर्शन देते हैं। संगत को लाभ हो जाता है।

हे जगत पिता हे जगत गुरू। मुझे अपना प्रेम और प्यार दे॥
तेरी भक्ति में लगे मन मेरा। विषय वासना को बिसार दे॥
कुछ माँगूँ तो गुनाहगार हूँ। मैं तो चाहता दीदार हूँ॥
या मैं वार हूँ या मैं पार हूँ। या तो मार दे या जिला मुझे॥
मेरी रोते रोते उमर कटी। कभी जाँ रही कभी जाँ गई॥
ज़रा एक दफ़ा तो मिलो सही। सावनशाह अब न जला मुझे॥
न हो दुश्मनों से मुझे गिला। करूं मैं बदी की जगह भला॥
मेरे लब से निकले सदा दुआ। चाहे कोई कष्ट हज़ार दे॥
नहीं मुझको ख़्वाहिश मरतबा। न है मालो ज़र की हवस मुझे॥
मेरी उम्र खिदमते खल्क में। मेरे सत्गुरू तू गुजार दे॥
लगे ज़ख्म दिल पे अगर किसी के। तो मेरा दिल भी तड़प उठे॥
मुझे ऐसा दे दिले दर्दमन्द। मुझे ऐसा सीना फ़िगार दे॥
मुझे प्राणीमात्र के वास्ते। करो सोज़े दिल वह अता पिता॥
चलूँ उनके ग़म में इस तरह। कि न ख़ाक तक भी गुबार दे॥
एक प्रेम की है यही कामना। यही एक इसकी है आरजू॥
कि यह चन्द रौजा है ज़िन्दगी। तेरी याद में गुज़ार दे॥

✦ ✧ ✦

रूहानी सत्संग निःशुल्क भेजे जाते हैं।
Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.